तेरा राज्य आए : युगांत-विद्या का

अध्याय चार

युग का अंत

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2012 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ की सेवकाई के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडिओ अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती है और हमारे अध्यायों के अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती है, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं के टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों, संस्थानों, व्यापारों और लोगों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना 1

सार्वजनिक पुनरुत्थान 2

शुरूआती विवाद 3

दिव्य अधिकार 5

नरक 5

स्वर्ग 6

सृष्टि पर प्रभाव 6

प्राकृतिक संसार 7

नरक 8

स्वर्ग 8

मनुष्यों पर प्रभाव 9

अंतिम न्याय 12

न्यायाधीश 12

पक्ष 13

पतित स्वर्गदूत 13

पुनर्जीवित नहीं हुए लोग 14

पुनर्जीवित हुए लोग 14

सबूत 15

निर्णय 16

अभिशाप 17

आशीषें 17

नया आकाश और नई पृथ्वी 18

शुद्धता 19

नयापन 20

भूगोल 22

एकीकृत राज्य 22

नया यरूशलेम 24

उपसंहार 25

तेरा राज्य आए : युगांत-विद्या का सिद्धांत

अध्याय चार

युग का अंत

प्रस्तावना

जब परमेश्वर ने संसार की सृष्टि की, तो उसका लक्ष्य पूरे ग्रह को अपने पृथ्वी वाले राज्य में बदलना था। उसने अदन की वाटिका को अपने निवास के रूप में स्थापित करने के द्वारा शुरूआत की। और उसने मानवता को संख्या में वृद्धि करने, और वाटिका की सीमाओं को पृथ्वी की छोर तक फैलाने के लिए नियुक्त किया। लेकिन, बेशक, मानवता ने पाप किया, और मानव जाति और सृष्टि दोनों को भ्रष्टता और मृत्यु की ओर धकेल दिया। परिणामस्वरूप, पृथ्वी को अभी तक परमेश्वर के लिए तैयार नहीं किया गया है, और वह अभी तक अपने राज्य को उसकी पूर्णता में पृथ्वी पर नहीं लाया है। लेकिन परमेश्वर ने अपनी योजना को नहीं छोड़ा है। और युग के अंत में, वह इसे — सिद्धता के साथ पूरा करेगा। वह अपने विश्वासी लोगों के लिए जीवन को बहाल करेगा, अपने संसार से अपने शत्रुओं को निकालेगा, अपने स्थायी राज्य के रूप में नए आकाश और नई पृथ्वी को स्थापित करेगा, और नए यरूशलेम में अपने सिंहासन से सर्वदा के लिए राज्य करेगा।

यह हमारी श्रृंखला *तेरा राज्य आए* का चौथा अध्याय है: *युगांत-विद्या का सिद्धांत,* और हमने इसका शीर्षक रखा है "युग का अंत।" इस अध्याय में, हम इतिहास की अंतिम घटनाओं के बारे में अपने अध्ययन को जारी रखेंगे जो इस वर्तमान युग को समाप्त कर देंगे और आने वाले युग को पूरी रीति से परिपूर्ण करेंगे।

जैसा कि हमने इस श्रृंखला के अपने पहले अध्याय में देखा था, पुराने नियम ने तीन चरणों में परमेश्वर के राज्य के प्रगट होने की अपेक्षा की: ब्रह्मांड और उसके जीवों की शुरूआती रचना; मानवता के पाप में गिरने के कारण आने वाले छुटकारे का एक लंबा समयकाल; और अंततः, चिरस्थायी अंत समय में, जिसे "आने वाला युग" भी कहते हैं। उद्धार पूरा हो जाने के बाद, जब परमेश्वर का स्वर्गीय राज्य पृथ्वी को भर देता है, तो वह अंत-समय ब्रह्मांड की अंतिम अवस्था है।

हमने यह भी देखा कि नए नियम ने अंत-समय को तीन चरणों में विभाजित करके इन अपेक्षाओं को बदल दिया। आने वाला युग *उद्घाटन* के साथ शुरू हुआ, जो यीशु के जीवन और पृथ्वी वाली सेवा तक फैला है, जिसमें पहली शताब्दी के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं द्वारा किए गए आधारभूत कार्य भी शामिल हैं। उद्घाटन के दौरान, वर्तमान युग आने वाले युग के साथ अधिव्यापन करने लगा। वर्तमान युग की विशेषता पाप, दुःख और मृत्यु है, जबकि आने वाले युग की विशेषता परमेश्वर के वफादार लोगों के लिए उसकी आशीषें हैं।

अंत-समय का दूसरा चरण निरंतरता है, जो उद्घाटन के एकदम बाद शुरू हुआ और यीशु के लौटने तक जारी रहेगा। निरंतरता के दौरान, हम वर्तमान युग की कठिनाइयों को ठीक उसी समय में झेलते हैं जब हम आने वाले युग की शुरूआती आशीषों का आनंद लेते हैं।

और तीसरा चरण परिपूर्णता का है, जो यीशु के वापस लौटने पर शुरू होगा। परिपूर्णता में, परमेश्वर इस वर्तमान युग को पूरी तरह से समाप्त कर देगा, और स्थायी रूप से, इसे आने वाले युग के साथ बदल देगा। इसलिए, इस अध्याय में, जब हम "युग के अंत" के बारे में बात करते हैं, तो वर्तमान युग की समाप्ती, और आने वाले युग की पूरी रीति से परिपूर्णता हमारे ध्यान में है। हमारे पिछले अध्याय के समान, यह अध्याय सामान्य युगांत-विद्या की बातों पर ध्यान-केंद्रित करेगा। जैसा कि आपको याद होगा, सार्वजनिक युगांत-विद्या है:

अंतिम दिनों में परमेश्वर के न्याय और उद्धार वाले सार्वभौमिक कार्यों का अध्ययन।

और, व्यक्तिगत युगांत-विद्या के विपरीत, सार्वजनिक युगांत-विद्या अंत समय की घटनाओं पर जोर देता है बजाय इसके कि कैसे अलग-अलग व्यक्ति उन घटनाओं का *अनुभव* करते हैं।

"युग के अंत" की हमारी व्याख्या तीन अनुक्रमिक घटनाओं को संबोधित करेगी। सबसे पहले, हम मृतकों के सार्वजनिक पुनरुत्थान को देखेंगे। दूसरा, हम अंतिम न्याय को देखेंगे। और तीसरा, हम नए आकाश और नई पृथ्वी में जीवन का वर्णन करेंगे। आइए, पहले सार्वजनिक पुनरुत्थान को देखें।

सार्वजनिक पुनरुत्थान

सार्वजनिक पुनरुत्थान को "सार्वजनिक" इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें हर वह व्यक्ति शामिल है जो कभी रहा था, चाहे पुनर्जीवित हुए या पुनर्जीवित नहीं हुए — वे अरबों मनुष्य जो कभी भी किसी भी काल में रहे हैं। और इसे "पुनरुत्थान" इसलिए कहा जाता है क्योंकि मृतकों की आत्माओं को उनके पुनर्गठित शरीरों के साथ फिर से जोड़ा जाएगा।

> मरने वाले सभी लोगों के शरीरों को फिर से जीवित किया जाएगा, न सिर्फ विश्वासियों के, लेकिन हर एक व्यक्ति को विशेष उद्देश्य के लिए पुनर्जीवित किया जाएगा, और वह है कि परमेश्वर द्वारा नियुक्त न्याय और परमेश्वर द्वारा नियुक्त न्यायी के सामने खड़ा होना है, जो कि उसका पुत्र, यीशु मसीह है। और न्याय में, यह उजागर किया जाएगा कि कौन जीवन की पुस्तक में है और किस व्यक्ति का न्याय उसके जीवन की पुस्तकों द्वारा किया जाएगा। जिन लोगों का न्याय उनके जीवन की पुस्तक द्वारा किया जाएगा वे इस फैसले को सुनेंगे, "मेरे सामने से दूर हो जाओ।" जिन लोगों के नाम जीवन की पुस्तक में हैं वे इस अद्‌भुत सत्य को सुनेंगे, "हे प्रिय, अंदर आ जाओ," इसलिए नहीं कि हम बेहतर थे, लेकिन इसलिए कि हमने अपने जीवनों को मसीह को सौंपा था, जिसने , हमारी भूल चूक और कार्यों में किये गए पापों के लिए क़ीमत चुकाकर, सभी के लिए, हमारे सभी पापों के लिए, अपने सभी लोगों के सभी पापों के लिए, अपने लहू से हमारे नामों को जीवन की पुस्तक में लिखा।
>
> — डॉ. हैरी एल. रीडर III

मृतकों के सार्वजनिक पुनरुत्थान को हम मध्यवर्ती अवस्था की अंतिम घटनाओं में से एक, या अंतिम अवस्था की पहली घटनाओं में से एक मान सकते हैं। यह *मध्यवर्ती* अवस्था का हिस्सा इस मायने में है कि, सार्वजनिक पुनरुत्थान में, पुनर्जीवित हुए और पुनर्जीवित नहीं हुए लोग अभी तक अपनी अंतिम अवस्था तक नहीं पहुँचे हैं। लेकिन यह *अंतिम* अवस्था का हिस्सा इस मायने में है कि हमारी आत्माएँ अब हमारे शरीरों से अलग नहीं हैं। इसके बावजूद कि हम इसे कैसे वर्गीकृत करते हैं, हालांकि सार्वजनिक पुनरुत्थान पुनर्जीवित न हुई आत्माओं के सभी अस्थायी सज़ाओं को और पुनर्जीवित आत्माओं के सभी अस्थायी आशीषों को समाप्त करता है, और उन्हें उनके अंतिम सज़ा और आशीष के लिए तैयार करता है।

हम चार भागों में सार्वजनिक पुनरुत्थान का पता लगाएंगे। सबसे पहले हम इस सिद्धांत के जुड़े कुछ शुरूआती विवादों को संबोधित करेंगे। दूसरा, हम इस युगांतरकारी घटना को लागू करने के लिए परमेश्वर के दिव्य अधिकार को इंगित करेंगे। तीसरा, हम सृष्टि पर इसके प्रभाव के बारे में बात करेंगे। और चौथा, हम मनुष्यों पर इसके प्रभाव की चर्चा करेंगे। आइए सार्वजनिक पुनरुत्थान के सिद्धांत पर शुरूआती विवादों को पहले देखते हैं।

शुरूआती विवाद

यीशु के दिनों में, मृतकों के पुनरुत्थान के विषय में विचार के कम से कम दो समूह थे। फ़रीसियों का विश्वास था कि धर्मियों और दुष्टों का सार्वजनिक पुनरुत्थान होगा। लेकिन सदूकियों ने इस बात से इनकार किया कि मृतकों का शारीरिक पुनरुत्थान होगा। वास्तव में, जब पौलुस को गिरफ्तार कर यहूदी न्यायलय के सामने पेश किया गया जिसे सैन्हेड्रिन कहा जाता है, तो उसने स्वयं के बचाव के लिए इस विवाद की अपील दी। प्रेरितों 23:6-8 में इस घटना के लिए लूका की रिपोर्ट को सुनिए:

> पौलुस ने ... सभा में पुकारकर कहा, "हे भाइयो, मैं फरीसी और फरीसियों के वंश का हूँ। मरे हुओं की आशा और पुनरुत्थान के विषय में मेरा मुक़द्दमा हो रहा है।" जब उसने यह बात कही तो फरीसियों और सदूकियों में झगड़ा होने लगा; और सभा में फूट पड़ गई। (क्योंकि सदूकी तो यह कहते हैं, कि न पुनरुत्थान है, न स्वर्गदूत और न आत्मा है; परन्तु फरीसी इन सब को मानते हैं) (प्रेरितों 23:6-8)।

फरीसियों और सदूकियों के बीच का विवाद प्रत्येक समूह द्वारा पवित्र शास्त्र की समझ में निहित है। फरीसियों ने संपूर्ण पुराने नियम को प्रेरित पवित्र शास्त्र के रूप में माना। लेकिन सदूकियों ने मूसा द्वारा लिखी गई सिर्फ पाँच पुस्तकों को स्वीकार किया — उत्पत्ति से लेकर व्यवस्थाविवरण तक, जिसे हम अकसर पेन्टाटचूक कहते हैं। यशायाह 26:19, और दानिय्येल 12:2 जैसे अनुच्छेदों में सार्वजनिक पुनरुत्थान को स्पष्ट रीति से सिखाया गया है। इसलिए, फरीसियों ने इसकी पुष्टि की। लेकिन सदूकियों ने इसका खंडन किया क्योंकि उन्होंने नहीं देखा कि मूसा की पुस्तकों में इस सिद्धांत को सिखाया गया है।

इस विवाद के संबंध में, यीशु, पौलुस और बाकी की शुरूआती कलीसिया ने स्पष्ट रूप से फरीसियों का पक्ष लिया। और सदूकियों का और भी दृढ़ता से खंडन करने के लिए, यीशु ने साबित किया कि उन्होंने स्वयं मूसा को गलत तरीके से समझा था। मरकुस 12:18-27 में, सदूकियों के एक समूह ने पुनरुत्थान के सिद्धांत पर उसे चुनौती दी। मरकुस 12:26-27 में, यीशु ने इस तरीके से जवाब दिया:

> मरे हुओं के जी उठने के विषय में क्या तुम ने मूसा की पुस्तक में झाड़ी की कथा में नहीं पढ़ा कि परमेश्वर ने उससे कहा, 'मैं अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूँ'? परमेश्वर मरे हुओं का नहीं वरन् जीवतों का परमेश्वर है। अतः तुम बड़ी भूल में पड़े हो! (मरकुस 12:26-27)।

यीशु के तर्क को हम इस तरह से सारांशित कर सकते हैं: परमेश्वर अभी अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ वाचा के संबंध में बंधा था। और इसको सत्य होने के लिए, अब्राहम, इसहाक और याकूब को आत्माओं के रूप में अभी भी जीवित रहना था। और यदि वे आत्माओं के रूप में जीवित थे, तो अंततः उन्हें पुनर्जीवित किया जाएगा — संभवतः वाचा वाली अपनी आशीषों को प्राप्त करने के लिए, जैसा कि यीशु ने मत्ती

8:11 में इंगित किया है। और यदि अब्राहम, इसहाक और याकूब जैसे विश्वासियों को फिर से जीवित किया जाना था, तो सार्वजनिक पुनरुत्थान भी सत्य था।

अफसोस की बात है, कि पहली सदी की कलीसिया में भी कुछ लोगों ने सार्वभौमिक, शारीरिक पुनरुत्थान से इनकार किया था। उदाहरण के लिए, 2 तिमुथियुस 2:18 में, पौलुस ने हुमिनयुस और फिलेतुस पर आरोप लगाया कि वे विश्वास करते हैं कि पुनरुत्थान हो चुका है। शायद उन्होंने सोचा था कि पुनरुत्थान सिर्फ आत्मिक था। या तो शायद उन्होंने सोचा कि यह उन पुनरुत्थानों में पूरा हो गया था जो उस समय हुए थे जब यीशु को क्रूस पर लटकाया गया था, जैसा कि मत्ती 27:52, 53 में दर्ज है। लेकिन कुछ भी हो, पौलुस ने कहा कि उन्होंने सत्य को त्याग दिया और विश्वास को उलट-पुलट कर दिया था।

पौलुस को कोरिन्थ में भी शारीरिक पुनरुत्थान के खिलाफ प्रतिरोध का सामना करना पड़ा, जैसा कि 1 कुरिन्थियों 15:12-34 में इस विचार के लिए उसके बचाव से पता चलता है। जाहिर है, कि कोरिन्थ में उसके विरोधियों ने पुनरुत्थान को आपत्तिजनक पाया था। इसलिए, पौलुस ने तर्क दिया कि यदि उन्होंने सभी पुनरुत्थान को अस्वीकार कर दिया था, तो उन्हें यीशु के पुनरुत्थान को भी अस्वीकार करना था। और यदि उन्होंने यीशु के पुनरुत्थान को अस्वीकार कर दिया, तो उन्हें पापों की क्षमा को भी अस्वीकार करना था। या जैसा कि पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 15:17 में इसे लिखा है:

> और यदि मसीह नही जी उठा, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है; और तुम अब तक अपने पापों में फँसे हो (1 कुरिन्थियों 15:17)।

दूसरी ओर, यदि उन्होंने यीशु के पुनरुत्थान को स्वीकार किया, तो किसी और के पुनरुत्थान से इनकार करने का उनके पास कोई कारण नहीं था। पौलुस ने यीशु को सभी पुनर्जीवित हुए लोगों के पुनरुत्थान के पहिलौठे के रूप में पहचाना, जिसका अर्थ है कि क्योंकि यीशु का पुनरुत्थान हुआ है, इसलिए भविष्य के हमारे पुनरुत्थान बिल्कुल निश्चित हैं। और पुनर्जीवित हुए लोगों के पुनरुत्थान का बचाव करने में, पौलुस ने सार्वजनिक पुनरुत्थान के लिए सभी आपत्तियों को भी हटा दिया।

> मसीह का पुनरुत्थान सभी विश्वासियों के पुनरुत्थान का आधार है। जैसा कि बरखॉफ ने कहा, यीशु का पुनरुत्थान साबित करता है कि वह पुनरुत्थान का प्रभु है, और उसका पुनरुत्थान सभी विश्वासियों के पुनरुत्थान को लाता है। यह बेहद महत्वपूर्ण है कि यीशु जीवितों का प्रभु है। जैसा कि कुलुस्सियों 1:18 कहता है, यीशु मसीह जी उठनेवालों में प्रथम, और पुनरुत्थान का पहिलौठा था। चुंकि वे जो मर गए हैं उनमें से जी उठनेवालों में वह प्रथम है, इसका अर्थ है, कि भविष्य में, जो उसका अनुसरण करते हैं उन्हें भी उसके साथ जिलाया जाएगा। यीशु मसीह के पुनरुत्थान के महत्व को दर्शाने के लिए पकी हुई फ़सल के चित्र का उपयोग किया जाता है। जैसे ही हम देखते हैं कि कटाई के मौसम में पेड़ में फल लगने शुरू होते हैं, और हम जानते हैं कि और फल आने हैं, यीशु मसीह का प्रथम पुनरुत्थान दिखाता है कि उसके साथ जी उठनेवाले लोगों का एक समूह होगा।
>
> — प्रो. हेज़हुआंग टिएन, अनुवादित

सार्वजनिक पुनरुत्थान से संबंधित शुरूआती विवादों को संबोधित करने के बाद, आइए मृतकों को जिलाने के लिए परमेश्वर के दिव्य अधिकार की ओर चलते हैं।

दिव्य अधिकार

परमेश्वर के दिव्य अधिकार को हम विभिन्न तरीकों से परिभाषित कर सकते हैं। लेकिन इस अध्याय में अपने उद्देश्यों के लिए, हम इसका वर्णन इस प्रकार करेंगे:

> अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए परमेश्वर का कानूनी और नैतिक अधिकार।

जब हम कहते हैं कि कुछ करने के लिए परमेश्वर के पास अधिकार है, तो हमारा अर्थ है कि यह पूरी तरह से उसके अधिकारों में निहित है, और यदि वह ऐसा करता है तो वह कोई गलत काम नहीं करता है।

सार्वजनिक पुनरुत्थान में परमेश्वर के अधिकार पर हमारी चर्चा दो भागों में विभाजित होगी: नरक के ऊपर उसका अधिकार, और स्वर्ग के ऊपर उसका अधिकार। आइए पहले नरक के ऊपर उसके अधिकार को देखें।

नरक

यह मानना महत्वपूर्ण है कि नरक के ऊपर परमेश्वर का पूरा अधिकार है। जब मध्यवर्ती अवस्था के दौरान वे आत्माएं जो पुनर्जीवित नहीं हुई नरक में पीड़ित होती हैं, तो वे इसलिए पीड़ा में होती हैं क्योंकि परमेश्वर उन्हें दण्ड दे रहा है। और जब उन्हें न्याय का सामना करने के लिए नरक से निकाला जाता है, तो वह इसलिए क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें अपने दरबार में बुलाया है।

अब, कभी-कभी मसीही लोगों ने कल्पना की है कि नरक का शासक शैतान है। उदाहरण के लिए, जॉन मिल्टन की महाकाव्य कविता *पैराडाइज़ लॉस्ट* में, शैतान के चरित्र ने दावा किया कि “स्वर्ग में सेवा करने की तुलना में, नर्क में शासन करना बेहतर” था। लेकिन वास्तविकता यह है कि परमेश्वर नरक पर शासन करता है, और शैतान, दुष्ट आत्माओं, और पुनर्जीवित नहीं हुई आत्माओं को वहाँ वह कैद में रखता है, उन पर उसका पूरा नियंत्रण है। जैसे कि पतरस ने 2 पतरस 2:4, 9 में लिखा:

> क्योंकि जब परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को जिन्होंने पाप किया नहीं छोड़ा, पर नरक में भेजकर अंधेरे कुण्डों में डाल दिया ताकि न्याय के दिन तक बन्दी रहें ... तो प्रभु ... अधर्मियों को न्याय के दिन तक दण्ड की दशा में रखना भी जानता है (2 पतरस 2:4, 9)।

> कुछ मायनो में दुष्ट शैतान का अपने दुष्ट आत्माओं पर अधिकार है, और वह उन्हें कुछ कार्य करने के लिए भेज सकता है, वह उन्हें बुराई करने के लिए भेज सकता है, लेकिन अंततः, दुष्ट शैतान, उसके सभी दुष्ट आत्माएँ, वे सभी पुनर्जीवित न हुई आत्माएँ जो नरक में हैं, वे सब यहोवा के अधिकार में हैं। वे परमेश्वर के अधिकार के तले हैं, वह परमेश्वर, जिसकी कोई उत्पत्ति नहीं है जो ब्रह्मांड का परमेश्वर है। और इसलिए, एक मायने में शैतान के पास कुछ शक्ति है, लेकिन वह सारी शक्ति जो उसके पास है, वह उस नियंत्रण पर समाप्त हो जाती है, जो यहोवा का उसके ऊपर है, और किसी भी समय यहोवा उस नियंत्रण पर रोक लगा सकता है और उसे वापस ले सकता है और उस शक्ति को समाप्त कर सकता है और जो कुछ वह चाहे उसके साथ कर सकता है।
>
> — डॉ. सैमुएल लैमनरसन

नरक के ऊपर जेलर के रूप में शासन करने, पुनर्जीवित नहीं हुई आत्माओं को कैद से तलब करने, और उन्हें अपने न्याय के सिंहासन के सामने प्रगट करने का पूर्ण अधिकार एवं सामर्थ्य परमेश्वर के पास है। और सार्वजनिक पुनरुत्थान के दौरान वह ठीक यही काम करने जा रहा है।

नरक के ऊपर परमेश्वर के दिव्य अधिकार की इस समझ को ध्यान में रखते हुए, आइए स्वर्ग के ऊपर उसके अधिकार की ओर बढ़ते है।

स्वर्ग

कुछ मसीही लोग नरक के ऊपर परमेश्वर के अधिकार के बारे में भ्रमित हैं, जबकि किसी को भी स्वर्ग के ऊपर उसके अधिकार के बारे में भ्रमित नहीं होना चाहिए। स्वर्ग परमेश्वर के सिंहासन का स्थान है — ऐसा स्थान जहाँ उसका अधिकार और उसकी महिमा किसी भी अन्य स्थान से अधिक खुले तौर पर प्रकट होती है। जैसे कि परमेश्वर ने इसे सरल रूप में यशायाह 66:1 में कहा:

> **स्वर्ग मेरा सिंहासन है (यशायाह 66:1)।**

पूरी सृष्टि में से, स्वर्ग ऐसा स्थान है जहाँ परमेश्वर अपने अधिकार को प्रत्यक्ष रूप से प्रकट करता है। हम इसी बात को मत्ती 5:34 और 23:22, और इब्रानियों 8:1 में पाते हैं।

परमेश्वर के कई विवरण, आत्मिक वास्तविकताओं के आलंकारिक प्रतिरूप हैं। लेकिन स्वर्ग में अपने सिंहासन से परमेश्वर के शासन का वर्णन और अधिक शाब्दिक प्रतीत होता है। स्वर्ग में परमेश्वर के एक वास्तविक सिंहासन के बारे में सोचने का एक कारण यह है कि, कई भविष्यद्वक्ताओं ने परमेश्वर को उस पर बैठे होने का दर्शन पाया। उदाहरण के लिए, पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता मीका ने उसे 1 राजा 22:19 और 2 इतिहास 18:18 में देखा। और पहले मसीही शहीद स्तिफनुस ने भी, प्रेरितों 7:55, 56 में ऐसा ही दर्शन पाया था। इन मामलों में, उनके सपने प्रतीकात्मक सपने या रूपक प्रतिरूपों में प्रकट नहीं होते, बल्कि ये स्वर्गीय वास्तविकताओं के भविष्यसूचक प्रकटीकरण हैं। दूसरे शब्दों में, उन्होंने स्वर्गीय दरबार के वास्तविक कामकाज को देखा, जहाँ परमेश्वर अपने सिंहासन पर बैठता है और बिना किसी चुनौती के राज करता है।

जैसा कि यीशु ने प्रभु की प्रार्थना में सिखाया है, स्वर्ग वह स्थान है जहाँ परमेश्वर की इच्छा सिद्ध रीति से पूरी होती है। और इसलिए यह नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के लिए एक मॉडल है, जिसे परमेश्वर अंतिम समय के आखिर में बनाएगा। मत्ती 6:10 में, यीशु ने अपने शिष्यों को ऐसे प्रार्थना करना सिखाया कि:

> **[परमेश्वर की] इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे ही पृथ्वी पर भी हो (मत्ती 6:10)।**

यीशु उस दिन को देख रहा था जब हमारे संसार को सिद्ध बनाया जाएगा — वह दिन जब उसके सभी शत्रुओँ को हटा दिया जाएगा, और उसके सभी लोग पापरहित और शांति में रहेंगे। और उसने उस भविष्य के संसार को स्वर्ग की वर्तमान अवस्था से तुलना करने के द्वारा वर्णित किया।

अब जबकि हमने शुरूआती विवादों के संबंध में सार्वजनिक पुनरुत्थान और इसे सच करने के लिए परमेश्वर के दिव्य अधिकार का पता कर लिया है, तो आइए सृष्टि पर इसके प्रभाव की बात करते हैं।

सृष्टि पर प्रभाव

सृष्टि पर सार्वजनिक पुनरुत्थान का प्रभाव कम से कम तीन अलग-अलग क्षेत्रों में महसूस किया जाएगा। सबसे पहले, यह प्राकृतिक संसार को महत्वपूर्ण तरीके से प्रभावित करेगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्राकृतिक संसार

जैसा कि आपको याद होगा, कि अंतिम समय की घटनाओं को, और विशेषकर इसकी परिपूर्णता में, संसार को परमेश्वर के अपने सांसारिक साम्राज्य में बदलने के लिए डिज़ाइन किया गया है। लेकिन मौजूदा संसार पाप और क्षय से भ्रष्ट है। इसलिए, प्राकृतिक संसार जैसे कार्य करता है उसे बदलने के लिए परमेश्वर युगांतरकारी घटनाओं का उपयोग करता है ताकि इसे अपनी उपस्थिति के लिए तैयार कर सके। *वेस्टमिन्सटर कनफेशन ऑफ फेथ,* अध्याय 5, भाग 3, मौलिक तरीकों में सृष्टि को बदलने की परमेश्वर की सामर्थ्य के बारे में बात करता है, तो वह कहता है:

> परमेश्वर, अपने सामान्य दिव्य विधान में, साधनों का उपयोग करता है, फिर भी वह अपनी इच्छानुसार उनके बिना, उनके ऊपर और उनके विरूद्ध काम करने के लिए स्वतंत्र है।

जब कनफेशन "साधनों" की बात करता है, तो उसके ध्यान में कारण और प्रभाव, मानवीय इच्छा और ब्रह्मांड के भौतिक नियम जैसी बातें हैं। लेकिन परमेश्वर साधनों के "बिना, उसके ऊपर और विरूद्ध" भी कार्य करता है। दूसरे शब्दों में, वह जब चाहे तब आश्चर्यकर्म कर सकता है।

जब मानवता पाप में गिर गई, तो हमारे ऊपर परमेश्वर के अभिशाप में स्वयं पृथ्वी के ऊपर अभिशाप शामिल था। यह खतरे और मृत्यु का स्थान बन गई, और स्वयं भूमि ने खेती करने के मानवता के प्रयासों का विरोध किया। जैसा कि उत्पत्ति 3:17-18 में, परमेश्वर ने आदम से कहा:

> इसलिये भूमि तेरे कारण शापित है; तू उसकी उपज जीवन भर दुःख के साथ खाया करेगा। वह तेरे लिए काँटे और ऊँटकटारे उगाएगी (उत्पत्ति 3:17-18)।

लेकिन रोमियों 8 में, पौलुस ने इस समस्या के समाधान के रूप में परमेश्वर द्वारा पुनर्जीवितों के चमत्कारी पुनरुत्थान की प्रत्याशा की। उसने सिखाया कि पुनरुत्थान में, स्वयं पृथ्वी, छुड़ाई गई मानवता के पुनरुत्थान के माध्यम से बचाई जाएगी। रोमियों 8:19-23 में पौलुस ने जो लिखा उसे सुनिए:

> क्योंकि सृष्टि बड़ी आशाभरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोह रही है ... कि सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी। क्योंकि हम जानते हैं कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है। और केवल वही नहीं पर हम भी जिनके पास आत्मा का पहला फल है, आप ही अपने में कराहते हैं; और लेपालक होने की, अर्थात अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं (रोमियों 8:19-23)।

इन पदों में, पौलुस ने सिखाया कि हमारी देह का छुटकारा, अर्थात, हमारा पुनरुत्थान, पुत्रों के समान हमारे लेपालकपन को पूरा करेगा। यह तब होगा जब परमेश्वर के पुत्र प्रगट होंगे, और स्वयं सृष्टि को स्वतंत्र किया जाएगा।

साधारण शब्दों में कहें तो, जिस तरीके से उत्पत्ति 3 में मानवता के ऊपर परमेश्वर के अभिशाप के माध्यम से सृष्टि भ्रष्ट हो गई थी, उसी तरह से मानवता के लिए परमेश्वर के शक्तिशाली छुटकारे के माध्यम से सृष्टि को उसकी भ्रष्टता से शुद्ध किया जाएगा। और यह छुटकारा तब पूरा होगा जब पुनर्जीवित हुए लोग सार्वजनिक पुनरुत्थान के हिस्से के रूप में जिलाए जाएंगे।

भौतिकी, रसायनिक और जीव-विज्ञान के नियमों और सिद्धांतों के अनुसार, सार्वजनिक पुनरुत्थान असंभव होगा। लेकिन परमेश्वर *जो कुछ* करना चाहता है उसे करने में वह सामर्थ्य है, इसलिए प्राकृतिक संसार के भौतिक नियम उसकी आज्ञा का पालन करेंगे। अरबों लोग जीवित होंगे — यहाँ तक कि वे भी जो हज़ारों वर्षों से मरे पड़े हैं। यह परमेश्वर की सामर्थ्य का एक अद्‌भुत प्रदर्शन होगा। और यह निर्विवाद साबित करेगा कि हमारे सबसे महत्वपूर्ण वैज्ञानिक सिद्धान्तों की तुलना में उसका अधिकार ब्रह्मांड के कार्य के लिए अधिक मौलिक है।

सृष्टि पर सार्वजनिक पुनरुत्थान का प्रभाव नरक को भी प्रभावित करेगा, जहाँ पुनर्जीवित न हुए लोग और पाप में पतित स्वर्गदूत पहले से कैद में रखे गए थे।

नरक

जब पुनर्जीवित न हुए लोगों को जिलाया जाता है, तो उनकी आत्माओं को नरक से निकाला जाएगा और वे पृथ्वी पर उनके शरीरों को लौटा दी जाएंगी, ताकि वे परमेश्वर के न्याय का सामना कर सकें। लेकिन वे सिर्फ पुनर्जीवित न हुए लोग ही नहीं होंगे जिन्हें नरक से निकाला जाएगा। शैतान और अन्य दुष्टात्माओं को भी अंतिम-समय में इस क्षण तक निकाला जा चुका होगा।

कुछ धर्मविज्ञानी प्रकाशितवाक्य 20 को ऐसा सिखाते हुए समझते हैं कि शैतान, और शायद दुष्टात्माओं को, परमेश्वर के खिलाफ एक अंतिम विद्रोह में भाग लेने के लिए नरक में उनकी कैद से रिहा किया जाएगा। जैसा कि यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य 20:7-8 में रिपोर्ट दी:

> जब हज़ार वर्ष पूरे हो चुकेंगे तो शैतान कैद से छोड़ दिया जाएगा। वह उन जातियों को जो पृथ्वी के चारों ओर होंगी, — गोग और मागोग को — भरमाकर लड़ाई के लिये इकट्ठा करने को निकलेगा (प्रकाशितवाक्य 20:7-8)।

अन्य धर्मविज्ञानी 2 पतरस 2:4, जैसे अनुच्छेदों की ओर संकेत करते हैं, जिसे हमने पहले पढ़ा था, जो कहता है कि पतित स्वर्गदूतों को न्याय के दिन तक अंधेरे कुण्ड में बन्दी बनाकर रखा गया है। लेकिन किसी भी मामले में, ऐसा लगता है कि नरक स्वयं खाली होगा: दुष्टात्माओं को विद्रोह में लड़ने के लिए पुनरुत्थान से पहले रिहा किया जाएगा; या उन्हें पुनर्जीवित न हुए लोगों के संग न्याय के लिए बुलाया जाएगा।

सृष्टि पर सार्वजनिक पुनरुत्थान का तीसरा प्रभाव यह है कि स्वर्ग अब पुनर्जीवित आत्माओं का निवास नहीं होगा।

स्वर्ग

जिलाए गए पुनर्जीवित न हुए लोगों के समान, जिलाए गए पुनर्जीवित लोगों को परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने प्रगट होने के लिए पृथ्वी पर लौटा दिया जाएगा। स्वर्ग एक अद्‌भुत स्थान है, इसलिए आश्चर्य करना स्वाभाविक है कि हम इसे कभी भी क्यों छोड़ना चाहेंगे। लेकिन परमेश्वर ने कभी यह अभिप्राय नहीं किया कि हम वहाँ हमेशा के लिए रहें। पहली बात यह कि, स्वर्ग में हमारे पास शरीर नहीं है। इसलिए, एक महत्वपूर्ण समझ है जिसमें हम वहाँ पर संपूर्ण मनुष्य नहीं हैं। इसके अलावा, पुनरुत्थान के बाद, यीशु का सिंहासन पृथ्वी पर होगा, न कि स्वर्ग में। और उसकी उपस्थिति में बने रहना हमारे लिए बेहतर है। और निश्चित रूप से, स्वर्ग जितना भी अद्‌भुत है, लेकिन नए आकाश और नई पृथ्वी में परमेश्वर के पास हमारे लिए कुछ बेहतर है।

> हाँ, यह सत्य है कि मृत्यु के बाद जो परमेश्वर के हैं वे आनंद लेते हैं जिसे कुछ लोग परमेश्वर की उपस्थिति में आनंद की अवस्था कह सकते हैं, और जिसे हम "मध्यवर्ती अवस्था" कहते हैं। वास्तविक बात यह है: परमेश्वर चाहता है कि उसकी सृष्टि परिपूर्णता में हो जाए। इसमें मनुष्यों का पूर्ण होना शामिल है, अंत में, वे जो उसके हैं, वे जो बचाए गए हैं ... इसलिए भले ही लोगों के लिए परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव करना एक महान बात है, तथ्य है, वह पूर्णता, सृष्टि की परिपूर्णता यह है, कि हम शरीरों में हो, और ये शरीर परमेश्वर का विचार है। यदि हम सोचते हैं कि हमारे लिए सबसे उत्तम बात यह है कि हम अपने शरीर से बाहर होकर परमेश्वर की उपस्थिति में रहें, तो मुझे लगता है कि इस बात के लिए कि परमेश्वर के पास वास्तव में उसकी संपूर्ण सृष्टि के लिए उद्धार है, हमारी सोच गलत है, और इसमें हमारे शरीरों का उद्धार, हमारे शरीरों का परिवर्तन भी शामिल है। और अंत में, निश्चित रूप से, मसीह शरीर में जिलाया गया है। यदि वह शरीर में जिलाया गया है और वह पहिलौठा है, तो फिर उसके बाद क्या आता है? हमारे शरीरों का पुनरुत्थान।
>
> — विन्सेंट बेकोट, **Ph.D.**

पुनरुत्थान के दौरान पुनर्जीवित आत्माओं से खाली हो जाने के अलावा स्वर्ग, स्वर्गदूतों से भी से खाली हो जाएगा। मत्ती 25:31 कहता है कि जब यीशु लौटेगा, तो वह *सब* स्वर्गदूतों को अपने साथ लाएगा। और मत्ती 24:31 कहता है कि आकाश और पृथ्वी की इस छोर से उस छोर तक जिलाए गए पुनर्जीवित लोगों को इकट्ठा करना, और उन्हें मसीह के पास जमा करना उनका कार्य होगा।

संक्षेप में, अंतिम न्याय के लिए उन्हें जमा करने के द्वारा, सार्वजनिक पुनरुत्थान हर एक मानव और हर एक स्वर्गदूत को पृथ्वी पर ला खड़ा करेगा। और परिणामस्वरूप, स्वर्ग और नरक पूरी तरह से खाली हो जाएंगे।

शुरूआती विवादों, दिव्य अधिकार और सृष्टि पर प्रभाव के संबंध में सार्वजनिक पुनरुत्थान का वर्णन करने के बाद, आइए मनुष्यों पर पुनरुत्थान के प्रभाव को देखते है।

मनुष्यों पर प्रभाव

सार्वजनिक पुनरुत्थान में सभी मनुष्य जो कभी भी रहें हो शामिल होंगे, चाहे वे पुनर्जीवित हुए हों या पुनर्जीवित न हुए हों। जैसा कि यीशु ने यूहन्ना 5:28-29 में कहा:

> वह समय आता है कि जितने कब्रों में हैं वे ... निकल आएँगे — जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दण्ड के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे (यूहन्ना 5:28-29)।

जैसा कि हमने पहले के एक अध्याय में उल्लेख किया था, कि जब बाइबल पुनरुत्थान में लोगों के अपनी कब्रों में से जिलाए जाने के बारे में बात करती है, तो इसका अर्थ यह नहीं है कि सिर्फ वे लोग जिलाए जाएंगे जिनके शरीर दफनाने के द्वारा संरक्षित किए गए हैं। इसके विपरीत, वे सभी जो मर गए हैं शामिल होंगे। उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य 20:13 में, यूहन्ना ने कहा कि समुद्र उन मरे हुओं को जो उसमें थे दे देगा,

और मृत्यु और अधोलोक में आत्माओं को फिर से जिलाया जाएगा। यही विचार यशायाह 26:19, दानिय्येल 12:2, और यूहन्ना 11:24 जैसे स्थानों में प्रतिबिंबित है।

हमारे शरीर चाहे *जहाँ कहीं* भी हों — और चाहे भले ही वे अब अस्तित्व में न हों — हम सभी को सार्वजनिक पुनरुत्थान में जिलाया जाएगा। लेकिन हमारे पुनरुत्थान वाले शरीर किसके समान होंगे? अभी हमारे पास मौजूद शरीरों से वे कितने मिलते-जुलते होंगे?

> बहुत से लोग जानना चाहेंगे कि सार्वजनिक पुनरुत्थान के बाद हमारे पुनरुत्थान वाले शरीर कैसे दिखेंगे। मृतकों में से जी उठने के बाद यीशु के पुनरुत्थान वाले शरीर का अध्ययन करना, इस प्रश्न का जवाब देने का सबसे अच्छा तरीका है। उसके शरीर में उसके पुराने शरीर के समान तत्व थे — यीशु ने खाया, पिया, और बातें की। फिर भी दूसरे तरीकों में उसका शरीर पुराने शरीर से अलग था — यीशु बंद दरवाजों से होकर चला आया और गायब हो गया। और बाइबल हमारे पुनरुत्थान वाले शरीरों को स्वयं यीशु के जैसे ही "महिमामय शरीरों" के रूप में संदर्भित करती है।
>
> — डॉ. रियाड कासिस, अनुवादित

हमारे पुनरुत्थान वाले शरीर पूरी तरह नए नहीं होंगे। इसके बजाय, वे अभी हमारे पास मौजूद शरीरों के पुनर्गठित संस्करण होंगे। मृत्यु में, हमारे शरीर दाह संस्कार, अपघटन या अन्य साधनों द्वारा पूरी तरह से नष्ट हो जाते हैं। लेकिन परमेश्वर सब कुछ करने में सक्षम है। उन लोगों के मामले में जिनके शरीर अभी भी किसी न किसी रूप में मौजूद हैं, पवित्र शास्त्र इंगित करता है कि उन शरीरों को जिलाया और बहाल किया जाएगा। उन शरीरों के मामले में जो पूरी तरह से खत्म या नष्ट हो गए हैं, पवित्र शास्त्र स्पष्ट नहीं है। लेकिन यह विश्वास करना तर्क संगत है कि परमेश्वर नए शरीरों को बना सकता है जो मूल शरीर की पहचान को बनाए रखते हैं।

और पहचान के बारे में यह बिंदु महत्वपूर्ण है। इसका अर्थ है कि हमारे पुनरुत्थान वाली अवस्था में, हम वैसे ही लोग होंगे जैसे कि अभी हैं — शरीर और आत्मा। परमेश्वर पुनर्जीवित लोगों को संपूर्ण व्यक्तियों के रूप में उद्धार देगा, और वह पुनर्जीवित न हुए लोगों को संपूर्ण व्यक्तियों के रूप में दोषी ठहराएगा। परन्तु भले ही हम इन्हीं भौतिक शरीरों के साथ अपनी पहचान बनाए रखते हैं, फिर भी हमारे वर्तमान शरीरों और हमारे पुनरुत्थान वाले शरीरों के बीच गुणात्मक अंतर होगा। पुनर्जीवित हुए लोगों के संबंध में, 1 कुरिन्थियों 15:42-44 कहता है:

> शरीर नाशवान दशा में बोया जाता है, और अविनाशी रूप में जी उठता है; वह अनादर के साथ बोया जाता है, और तेज के साथ जी उठता है; निर्बलता के साथ बोया जाता है, और सामर्थ्य के साथ जी उठता है; स्वाभाविक देह बोई जाती है, और आत्मिक देह जी उठती है (1 कुरिन्थियों 15:42-44)।

पुनर्जीवित लोगों के पुनरुत्थान वाले शरीर हमारे वर्तमान शरीरों की तुलना में बहुत अधिक तेजोमय, अमर और शक्तिशाली होंगे। वास्तव में, पवित्र शास्त्र सिखाता है कि हमारे पुनरुत्थान वाले शरीर उस शरीर के समान होंगे जिसे यीशु ने तब प्राप्त किया था जब वह मृतकों में से जी उठा था। जैसे कि पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 15:49 में तर्क दिया:

> और जैसे हम ने [आदम का] रूप धारण किया जो मिट्टी का था वैसे ही उस स्वर्गीय [यीशु] का रूप भी धारण करेंगे।

और 1 यूहन्ना 3:2 में, हम पढ़ते हैं:

> और अभी तक यह प्रगट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा तो हम उसके समान होंगे।

पवित्र शास्त्र पुनर्जीवित न हुए लोगों के पुनरुत्थान वाले शरीरों का वर्णन नहीं करता है। निश्चित रूप से वे पुनर्जीवित लोगों के शरीरों के समान तेजोमय नहीं होंगे। लेकिन पूरी अंतिम अवस्था में रहने के लिए उन्हें किसी रीति से अलग होना होगा। हालांकि, अफसोस की बात है, कि पुनर्जीवित नहीं हुए लोगों के लिए पुनरुत्थान दहशत का स्रोत होगा। वे डर और शर्म से भर जाएंगे। उनके नए शरीर उन्हें अतिरिक्त पीड़ाओं की चपेट में ले लेंगे। और उनकी अंतिम कैद उस नरक से भी बदतर होगी जिसको वे पहले ही सह चुके हैं।

पुनर्जीवित लोगों के तेजोमय पुनरुत्थान और पुनर्जीवित न हुए लोगों के डरावने पुनरुत्थान पर हमारी चर्चा एक प्रत्यक्ष प्रश्न को उठाती है: यीशु के वापस आने पर जो लोग अभी भी जीवित हैं उनका क्या होगा? यदि वे मरे भी नहीं हैं तो उन्हें कैसे जिलाया जा सकता है? पुनर्जीवित हुए लोगों के संबंध में, हमें एक क्षण में बदल दिया जाएगा, ताकि हमारे शरीर जिलाए गए पुनर्जीवित लोगों के समान हो जाएं। 1 कुरिन्थियों 15:51-52 में, पौलुस ने यह व्याख्या दी:

> हम सब नहीं सोएँगे, परन्तु सब बदल जाएँगे, — और यह क्षण भर में, पलक मारते ही अन्तिम तुरही फूँकते ही होगा। क्योंकि तुरही फूँकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएँगे, और हम बदल जाएँगे (1 कुरिन्थियों 15:51-52)।

यहाँ, पौलुस ने "सोएंगे" शब्द का उपयोग मरने के लिए एक व्यंजना के रूप में किया। इस तरह, जो लोग नहीं मरे हैं, वे ठीक उनके जैसे ही होंगे जो जिलाए गए हैं।

हालांकि, पवित्र शास्त्र पुनर्जीवित न हुए लोगों के बारे में पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है। ऐसा हो सकता है कि सार्वजनिक पुनरुत्थान से पहले, वे सभी शैतान के विद्रोह की अंतिम लड़ाई में मारे जाएंगे। यह प्रकाशितवाक्य 20:7-10 जैसे अनुच्छेदों से निहित हो सकता है, जहाँ शैतान की सेना समुद्र के किनारे की बालु के समान है। यदि यह सच है, तो जब पुनरुत्थान होगा तो पुनर्जीवित न हुआ एक भी व्यक्ति जिन्दा नहीं बचा होगा। लेकिन ऐसा भी हो सकता है कि कुछ पुनर्जीवित न हुए लोग इस लड़ाई में बच जाएं। यदि ऐसा है, तो यह समझ में आता है कि वे भी पुनर्जीवित हुए लोगों की तरह. एक क्षण में बदल जाएंगे। अंतर यह होगा कि उनके पुनरुत्थान वाले शरीर अन्य जिलाए गए पुनर्जीवित न हुए लोगों के समान होंगे, जो हमेशा के दण्ड को भुगतने के लिए तैयार किए गए होंगे।

किसी भी स्थिति में, सार्वजनिक पुनरुत्थान का परिणाम मानव जाति का संपूर्ण पुनर्गठन होगा, — हर एक व्यक्ति एक चिरस्थायी शरीर में एक चिरस्थायी आत्मा के रूप में विद्यमान रहेगा। हम संपूर्ण व्यक्ति होंगे, और एक साथ हम पूरी मानव जाति का गठन करेंगे। और इस रीति से, मानवता को अपने अंतिम न्याय का सामना करने के लिए तैयार किया जाएगा।

"युग के अंत" पर हमारे अध्याय में अभी तक हमने मृतकों के सार्वजनिक पुनरुत्थान को संबोधित किया है। अब आइए अंतिम न्याय पर ध्यान केंद्रित करें।

अंतिम न्याय

अंतिम न्याय एक युगांतरकारी घटना है जब परमेश्वर औपचारिक रूप से अपने सभी शत्रुओं द्वारा किये गए अपराधों के लिए उन्हें दोषी ठहराएगा, और उन पर अनंत दण्ड की घोषणा करेगा। और वह औपचारिक रूप से उन सभी की निर्दोषता की भी घोषणा करेगा जो मसीह में हैं, और उनके अनंत उपहारों और पुरस्कारों को देगा। यह एक बहुत ही सार्वजनिक घटना होगी जिसमें पुनरुत्थान की गई पूरी मानव जाति और स्वर्गदूतों की पूरी मण्डली, पतित और चुने हुए दोनों उपस्थित रहेंगे।

अंतिम न्याय की हमारी चर्चा चार भागों में विभाजित होगी। सबसे पहले, हम न्यायिक कार्यवाही के न्यायधीश की पहचान करेंगे। दूसरा, हम उन पक्षों पर विचार करेंगे जिनका न्याय होगा। तीसरा, हम उन साक्ष्यों का उल्लेख करेंगे जिनका मूल्यांकन न्यायाधीश करेगा। और चौथा, हम उन निर्णयों पर चर्चा करेंगे जिन्हें वह सुनाएगा। आइए पहले स्वयं न्यायाधीश को देखते हैं।

न्यायाधीश

नया नियम कई स्थानों में सिखाता है कि यीशु अंतिम न्याय में न्यायाधीश होगा। उदाहरण के लिए, हम इसे मत्ती 25:31-46, यूहन्ना 5:26-30, प्रेरितों 10:42 और 17:30, 31, और कई दूसरे स्थानों में देखते हैं। सिर्फ एक छोटे से उदाहरण के रूप में, 2 तिमुथियुस 4:1 कहता है:

> मसीह यीशु ... जीवतों और मरे हुओं का न्याय करेगा (2 तिमुथियुस 4:1)।

यही विश्वास कलीसिया के शुरूआती सदियों से मसीही विश्वास के कथनों में सुनाई दे रहा है। उदाहरण के लिए, प्रेरितों का विश्वास जो कि सन् 700 ईसवीं के आसपास मानकीकृत किया गया, कहता है:

> यीशु मसीह ... जीवितों और मृतकों का न्याय करने के लिए आएगा।

और नाएसिन विश्वास का कथन, जिसे पहली बार सन् 325 ईसवीं में रचा गया, और सन् 381 ईसवीं में संशोधित किया गया, वह कहता है:

> यीशु मसीह ... फिर महिमा के साथ, जीवतों और मृतकों का न्याय करने के लिए आएगा।

सभी मनुष्यों और स्वर्गदूतों पर अंतिम न्याय सुनाने का अधिकार, सहज रूप से परमेश्वर पिता का है। लेकिन पिता ने यह अधिकार पुत्र को दिया है। पतरस ने पिता द्वारा यीशु की नियुक्ति के बारे में प्रेरितों के काम 10:42 में बात की है। पौलुस ने इसका उल्लेख प्रेरितों 17:31 में किया है। और स्वयं यीशु ने दावा किया कि उसे यह सम्मान मसीहा के रूप में उसकी भूमिका के कारण मिला है। यूहन्ना 5:26-27 में यीशु के वचनों को सुनिए:

> पिता ... ने [पुत्र] को न्याय करने का भी अधिकार दिया है, इसलिये कि वह मनुष्य का पुत्र है (यूहन्ना 5:26-27)।

इस पद में, "मनुष्य का पुत्र" एक मसीहा की उपाधि लिए हुए है; यह मसीहा के रूप में यीशु की पहचान करता है, जो दाऊद से बाँधी गयी वाचा और सिंहासन का उत्तराधिकारी है।

> पिता ने पुत्र को न्याय सुनाने के लिए मध्यस्थ के रूप में नियुक्त किया है, वह, जो दण्ड देता है। इसके कई कारण है जिनमे से एक है — हालांकि ये पूरी तरह से प्रमुख नहीं है — फिर भी कि क्यों पिता ने पुत्र को ऐसा करने के लिए नियुक्त किया है, उसका एक कारण यह भी है, क्योंकि यह दानिय्येल 7 को पूरा करता है। दानिय्येल 7 में, मनुष्य का पुत्र वह है जो चारों पशुओं का "सामना करता है" और विजयी होकर उभरता है, और वह अति प्राचीन की उपस्थिति में जाता है, और वहाँ उसकी भूमिका, वास्तव में, दानिय्येल 7 में मनुष्य के पुत्र का उल्लेख करने का मुख्य कारण है क्योंकि वह एक ऐसा न्यायी है जो इन विद्रोही राज्यों का न्याय करता है ... दूसरे शब्दों में मनुष्य का पुत्र अति प्राचीन की इच्छा को कार्यान्वित करता है।
>
> — डॉ. बेन्जामिन ग्लैड

नया नियम यह भी सिखाता है कि चुने हुए लोग या धर्मी स्वर्गदूत उसके न्यायाधीश की भूमिका में यीशु की सहायता करेंगे। उदाहरण के लिए, मत्ती 13:41, 42 में, गेहूँ और जंगली पौधों के दृष्टांत में, यीशु ने स्वर्गदूतों की तुलना कटनी के दौरान फ़सल काटने वालों से की। विशेष रूप से, उसने जंगली पौधों की पहचान उन लोगों से है जो बुरा करते हैं, या पुनर्जीवित न हुए लोगों से की, और कहा कि उसके स्वर्गदूत उन्हें इकट्ठा करेंगे और उन्हें आग के कुण्ड में डालेंगे। इसका अर्थ यह हो सकता है कि स्वर्गदूत नरक से जिलाए गए कैदियों को अंतिम न्याय तक लाएंगे, और फिर उनके अंतिम दण्ड को पूरा करने के लिए उन्हें ले जाएंगे। और मत्ती 24:31 में, यीशु ने संकेत दिया कि न्याय के दिन के लिए चुने हुओं या पुनर्जीवित लोगों को इकट्ठा करने की एक ऐसी ही भूमिका स्वर्गदूतों के पास है।

इसके अलावा, 1 कुरिन्थियों 6:2, 3 सुझाव देता है कि पुनर्जीवित न हुए लोगों और पतित स्वर्गदूतों, दोनों का न्याय करने में पुनर्जीवित लोग प्रभु की सहायता करेंगे। और प्रकाशितवाक्य 20:4 संकेत देता है कि कुछ मसीह के लोग उस न्याय में और अधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगे। इसके अलावा, भजन 149:5-9 भविष्यवाणी करता है कि पुनर्जीवित हुए लोग वास्तव में यीशु की सहायता उन लोगों के दण्ड देने के आदेशों का पालन कराने में करेंगे जिन्हें वह दोषी ठहराएगा।

अंतिम न्याय को शासित करने वाले न्यायाधीश की पहचान करने के बाद, आइए उन पक्षों पर ध्यान दें जिनका वह न्याय करेगा।

पक्ष

पवित्र शास्त्र तीन अलग-अलग दलों या समूहों का उल्लेख करता है जो अंतिम न्याय का सामना करेंगे। पहला उल्लेख हम पतित स्वर्गदूतों का करेंगे, जिन्हें दुष्टात्माओं के रूप में भी जाना जाता है।

पतित स्वर्गदूत

दोनों 2 पतरस 2:4, और यहूदा 6, रिपोर्ट देते हैं कि दुष्टात्माएँ स्वर्गदूत हुआ करते थे उन्हें परमेश्वर से पद प्राप्त थे। लेकिन उन्होंने उसके खिलाफ विद्रोह किया, और अपने स्वर्गीय निवासों और अपने पद को छोड़ दिया। परिणामस्वरूप, उन्हें अब मसीह के न्याय की प्रतीक्षा करते हुए बन्धनों में अंधकार भरे काल कोठरी में रखा गया है।

चुने हुए स्वर्गदूत — अर्थात, जो पाप में पतित नहीं हुए हैं — उन्हें न्याय में शामिल नहीं किया जाएगा क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के खिलाफ कभी पाप नहीं किया है। इसलिए, उन्हें दोषी ठहराने का कोई कारण नहीं है।

न्याय का सामना करने वालों में दूसरा पक्ष पुनर्जीवित नहीं हुए लोग होंगे।

पुनर्जीवित नहीं हुए लोग

पवित्र शास्त्र के कई अध्याय सिखाते हैं कि जब पुनरुत्थान के बाद मानव जाति मसीह के न्याय वाले सिंहासन के सामने प्रगट होगी, तो प्रभु पुनर्जीवित न हुए लोगों को पुनर्जीवित हुए लोगों से अलग करेगा। दुष्टों के धर्मियों से इस विभाजन के बारे में पौलुस ने रोमियों 2:5-8 में बात की। और यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य 11:18 और 20:11-15 में इसके दर्शनों को पाया। और स्वयं यीशु ने मत्ती 25 में अपने जैतून के पहाड़ वाले प्रवचन में इसके बारे में बात की। और इनमें से प्रत्येक अनुच्छेदों में हमें बताया गया है कि, अंतिम न्याय के समय, मसीह पुनर्जीवित नहीं हुए लोगों को दण्ड देगा। मत्ती 25:31-46 में यीशु ने जो कहा उसे सुनिए:

> जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा ... तो वह अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा। और सब जातियाँ उसके सामने इकट्ठा की जाएँगी; ... वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा ... तब वह बाईं ओर वालों से कहेगा, ... मेरे सामने से ... चले जाओ, ... और ये अनन्त दण्ड भोगेंगे (मत्ती 25:31-46)।

पुनर्जीवित हुए लोग पक्षों में तीसरे होंगे जिनका मसीह द्वारा न्याय किया जाएगा।

पुनर्जीवित हुए लोग

यीशु द्वारा पुनर्जीवित हुए लोगों में से पुनर्जीवित न हुए लोगों को अलग करने के बाद, वह पुनर्जीवित हुए लोगों पर भी न्याय को सुनाएगा। हम इसे कई स्थानों में देखते हैं, जिनमें रोमियों 2:7, प्रकाशितवाक्य 11:18 सहित और फिर से मत्ती 25 शामिल है, जहाँ यीशु ने पुनर्जीवित न हुए लोगों की बकरियों से और पुनर्जीवित हुए लोगों की भेड़ों से तुलना की। मत्ती 25:33-34 में पुनर्जीवित हुए लोगों के बारे में यीशु ने जो कहा उसे सुनिए:

> वह भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर और बकरियों को बाईं ओर खड़ा करेगा। तब राजा अपनी दाहिनी ओर वालों से कहेगा, 'हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया गया है (मत्ती 25:33-34)।

अब, हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि कुछ मसीही लोग गलती से यह विश्वास करते हैं कि पुनर्जीवित हुए लोगों का न्याय बिल्कुल भी नहीं होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि यूहन्ना 5:24 का अनुवाद यह कहते हुए किया जा सकता है कि विश्वासी लोगों का न्याय नहीं होगा। लेकिन कई अनुवाद, और ज्यादातर व्याख्याकार, इस पद को सही अर्थ में लेते हैं कि विश्वासियों पर *दण्ड की आज्ञा* नहीं होगी। वास्तव में, जैसा कि हम इस अध्याय में बाद में देखेंगे, कि यदि पुनर्जीवित नहीं हुए लोगों का न्याय नहीं होगा, तो वे अपने अनंत पुरस्कारों को प्राप्त नहीं करेंगे।

अब जबकि हमने इसके न्यायाधीश और उसके सामने खड़े होने वाले पक्षों के संबंध में अंतिम न्याय का पता लगा लिया है, तो आइए उन सबूतों को देखें जिन पर वह विचार करेगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

सबूत

परमेश्वर यह सुनिश्चित करने के लिए सबूतों के हर कल्पनाशील अंश पर विचार करेगा कि सही न्याय को बरकरार रखा जाए। हमने जो कुछ किया, सोचा, और कहा उसका वह मूल्यांकन करेगा। वह हमारे गुप्त उद्देश्यों पर ध्यान देगा। उसके साथ हमारे संबंधों को नियंत्रित करने वाली वाचाओं पर और जीवन में जो प्रकाशन हमें मिला है उस पर वह विचार करेगा। वह गवाहों को सुनेगा, और कम महत्व वाली परिस्थितियों का मूल्यांकन करेगा। कुछ भी छोड़ा नहीं जाएगा, और कुछ भी अस्वीकार्य नहीं होगा। और यह सब सिद्ध न्याय की खोज में किया जाएगा, ताकि हर इनाम और हर दण्ड उस व्यक्ति के लिए एकदम उपयुक्त हों जिसका न्याय हो रहा है। सभोपदेशक 12:14 सबूत के व्यापक दायरे को इस रीति से संक्षेप में प्रस्तुत करता है:

> क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा (सभोपदेशक 12:14)।

मत्ती 12:36 जोड़ता है कि:

> जो जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन वे हर एक उस बात का लेखा देंगे (मत्ती 12:36)।

और 1 कुरिन्थियों 4:5 कहता है:

> वही अन्धकार की छिपी बातें ज्योति में दिखाएगा, और मनों के अभिप्रायों को प्रगट करेगा (1 कुरिन्थियों 4:5)।

ऐसे ही विचार भजन 62:12, नीतिवचन 24:12, मत्ती 16:27, और रोमियों 2:5-11 में पाए जाते हैं।

जैसा कि हमने उल्लेख किया है, हालांकि, सभी को समान स्तर की जवाबदेही के लिए उत्तरदायी नहीं माना जाएगा। इसके विपरीत, हम सभी का न्याय हमारी अपनी परिस्थिति के अनुसार किया जाएगा। उदाहरण के लिए, जिन लोगों ने परमेश्वर की शर्तों की अधिक जानकारी के साथ, अधिक निन्दनीय तरीके से पाप किया है, उनका न्याय अधिक कठोर रीति से किया जाएगा। लूका 10:13-14 में जिन्होंने उसे ठुकराया था, उन लोगों को यीशु ने कैसे डांटा उसे सुनिए:

> हाय खुराजीन! हाय बैतसैदा! जो सामर्थ्य के काम तुम में किए गए, यदि वे सूर और सैदा में किए जाते तो टाट ओढ़कर और राख में बैठकर वे कब के मन फिराते। परन्तु न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सूर और सैदा की दशा अधिक सहने योग्य होगी (लूका 10:13-14)।

भजन 50:4-6 दर्शाता है कि न्याय में मसीह हमें हमारे वाचा वाले दायित्वों के लिए उत्तरदायी ठहराएगा। इसका निहितार्थ यह है कि हम में से जो परमेश्वर के साथ वाचा में बंधे हैं, वे उसकी आज्ञापालन के लिए अधिक बाध्य हैं। और याकूब 3:1 कहता है कि कलीसिया में उपदेशकों का न्याय अधिक सख्ताई से होगा।

हालाँकि, हमें यह स्पष्ट होना चाहिए कि जिन लोगों ने कभी भी सुसमाचार नहीं सुना है, उनका भी न्याय किया जाएगा और वे दोषी ठहराए जाएंगे। उनका दोष उन लोगों की तुलना में कम होगा जो स्पष्ट रूप से

मसीह को अस्वीकार करते हैं और जानबूझकर परमेश्वर और उसकी व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह करते हैं। लेकिन उनका भविष्य फिर भी एक जैसा होगा।

इसलिए प्रेरितों 20:26, 27 में, पौलुस ने तर्क दिया कि वह "सब मनुष्य के लहू से निर्दोष है" क्योंकि उसने "परमेश्वर के सारे अभिप्राय" का प्रचार किया था। उसका कहना था कि यदि लोग सुसमाचार नहीं सुनते हैं, तो वे अपने पापों में मर जाएंगे और हमेशा के लिए नाश हो जाएंगे। और, यदि उसने एक प्रचारक के रूप में अपना काम नहीं किया होता, तो वह उनसे जीवन के वचनों को रोकने के अपराध-बोध का भाग सहेगा।

> जिन लोगों ने सुसमाचार कभी नहीं सुना है, वे कई मामलों में अंतिम न्याय के समय दोषी ठहराए जा सकते हैं, और ठहराए जाएंगे, क्योंकि वे परमेश्वर के बारे में और उनसे अपेक्षित उसकी धर्मी आज्ञाओं के बारे में कुछ तो जानते हैं। रोमियों 1। प्रेरित पौलुस ने यह स्पष्ट किया है कि सृष्टि के माध्यम से परमेश्वर ने अपने बारे में हर मनुष्य के लिए चीज़ों को प्रकट किया है, इसलिए वे भी जो यीशु की कहानी के ज्ञान से आशीषित नहीं हुए हैं, वे निरुत्तर हैं, क्योंकि वे उन बातों को जानते हैं जो परमेश्वर के बारे में सत्य हैं और जिन बातों की अपेक्षा परमेश्वर उनसे करता है, और जैसा कि रोमियों हमें सिखाता भी है, कि उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन किया है। इसलिए, उनका न्याय उस ज्ञान पर आधारित होगा जो उन्हें प्राप्त हुआ है, परमेश्वर के चरित्र और इच्छा की ज्योति जो उन्होंने प्रकृति से प्राप्त की है। हम में से कुछ को पवित्र शास्त्र और यीशु के सुसमाचार संदेश के माध्यम से अधिक प्राप्त हुआ है। हम सब उसके लिए उत्तरदायी हैं। लेकिन सभी लोग उस ज्ञान के लिए उत्तरदायी हैं जो उन्हें परमेश्वर के बारे में सृष्टि से प्राप्त हुआ है, और इसके लिए उन्हें जवाबदेह ठहराया जाएगा। यीशु सुसमाचारों में यह स्पष्ट करता है कि जो ज्योति हमें प्राप्त हुई है और उसके प्रति हम कैसी प्रतिक्रिया देते हैं उसके लिए हम उत्तरदायी ठहराए जाएंगे।
>
> — रेव्ह. डैन हेन्डले

इसके न्यायाधीश, पक्षों, और सबूतों के संबंध में अंतिम न्याय के बारे में बात करने के बाद, हम उन निर्णयों पर चर्चा करने के लिए तैयार हैं जिन्हें यीशु सुनाएगा।

निर्णय

हमारे संसार में कई बड़े अन्याय हुए हैं। झूठ बोलने वाले और अत्याचारी लोग अपने वचनों और कामों के लिए कोई दण्ड नहीं सहते। अपराधी अक्सर आज़ाद घूमते हैं। जो लोग दूसरों की हानि या चोरी करते हैं वे उनकी क्षतिपूर्ति नहीं करते। लोगों को प्रताड़ित किया जाता है। समर्पित मसीही लोगों को उनके विश्वास के लिए बहुत सताया जाता है। उन लोगों को नुकसान पहुँचाने के लिए जिनकी मदद के लिए कानून बने थे, कानूनों का शोषण किया जाता है। सूची और अधिक लंबी हो सकती है। लेकिन पवित्र शास्त्र हमें सिखाता है कि इन सभी गलत बातों के ठीक होने के लिए — दुष्टों को दंडित करने और धर्मियों को पुरस्कृत करने के लिए हम अंतिम न्याय की ओर देखें। अंतिम न्याय वह घटना है जहाँ परमेश्वर सभी समीकरणों को संतुलित करता है, जहाँ भलाई वास्तव में आशीष को लाती है, और जहाँ बुरे परिणाम, लाभ नहीं, परन्तु अभिशाप में बदलते हैं।

सामान्य तौर पर, हम कह सकते हैं कि दो प्रकार के निर्णय हैं जिन्हें मसीह सुनाएगा: जिन्होंने बुरा किया है उनके लिए अभिशाप, और आशीषें उनके लिए जिन्होंने भला किया है। दुष्टों पर अभिशापों से शुरू करके, हम इनमें से प्रत्येक निर्णयों का वर्णन करेंगे।

अभिशाप

पवित्र शास्त्र आमतौर पर पतित स्वर्गदूतों के दण्ड और पुनर्जीवित नहीं हुए लोगों के दण्ड का वर्णन अलग-अलग स्थानों में करता है। लेकिन उनकी नियति आखिरकार एक जैसी ही है। साधारण शब्दों के कहें, तो मसीह के खिलाफ अपने विरोध के लिए, उसके लोगों के साथ अपने दुर्व्यवहार के लिए, और उन सभी पापों के लिए जो उन्होंने परमेश्वर के चरित्र और व्यवस्था के खिलाफ किए है, परमेश्वर के सभी शत्रु, चाहे स्वर्गदूत या मानव हों, उचित दण्ड पाएंगे। जैसा कि पौलुस ने अपने पाठकों को 2 थिस्सलुनीकियों 1:6-9 में बताया:

> परमेश्वर धर्मी है: कि जो तुम्हें क्लेश देते हैं, उन्हें बदले में क्लेश दे ... और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा। वे ... अनन्त विनाश का दण्ड पाएँगे (2 थिस्सलुनीकियों 1:6-9)।

जब पौलुस ने कहा कि दुष्ट अनंत विनाश से दण्डित किए जाएंगे, तो उसका अर्थ यह नहीं था कि वे मिटा दिए जाएंगे या उनका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। इसके विपरीत, उसके दिमाग में एक घोर दण्ड था जो दुष्टों के जीवनों का सत्यानाश कर देगा, और यह उन्हें हमेशा के लिए तबाही की अवस्था में छोड़ देगा। हम इसी विचार को दानिय्येल 12:2, मत्ती 25:46, यूहन्ना 5:29, रोमियों 2:7-12, और यहूदा 7 में देखते हैं।

प्रकाशितवाक्य 20:10-15 में दुष्टों के दण्ड का संक्षेप में वर्णन किया गया है। वहाँ, हमें बताया गया है कि शैतान जलते हुए गंधक की झील में, जिसे आग के कुण्ड के रूप में भी जाना जाता है हमेशा के लिए तड़पेगा। और उसके अनुयायी — प्रकाशितवाक्य 13–20 में उल्लिखित पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता सहित — यही दण्ड पाएंगे। और इसी तरह सभी पुनर्जीवित नहीं हुए लोग भी। यीशु अपने शत्रुओं को इसी अनंत, सचेत दण्ड के लिए दोषी ठहराएगा। इसके अतिरिक्त, मत्ती 11:23, 24, और इब्रानियों 10:29 जैसे अनुच्छेद सिखाते हैं, कि उनके पाप जितने बड़े होंगे, उनकी पीड़ा उतनी ही अधिक होगी।

यह देखने के बाद कि मसीह के निर्णयों में दुष्टों के लिए अभिशाप शामिल होंगे, आइए धर्मियों पर उसकी आशीषों को देखें।

आशीषें

मसीह में परमेश्वर की दया के कारण, पुनर्जीवित हुए लोग उस वाचा की अनंत आशीषों में साझेदारी करेंगे जिसे यीशु ने अर्जित किया। अपने सिद्ध जीवन, आज्ञाकारी मृत्यु, और शक्तिशाली पुनरुत्थान के द्वारा, जो *मसीह में* हैं वे पापों की क्षमा, नए आकाश और नई पृथ्वी में अनंत जीवन जैसी चीज़ों को प्राप्त करेंगे। और इन अनुग्रहकारी वरदानों के साथ भले कामों के लिए पुरस्कृत होंगे जिन्हें परमेश्वर मे पहले से ठहराया है और जिन्हें पवित्र आत्मा ने पुनर्जीवित हुए लोगों के जीवनों में पूरा किया है। यही कारण है, कि मत्ती 6:20, मरकुस 10:21, और लूका 12:33, 34 जैसे अनुच्छेदों में, यीशु ने स्वर्ग में धन जमा करने पर इतना जोर दिया है।

दो प्रकार की इन आशीषों — वरदानों और पुरस्कारों को — प्रकाशितवाक्य में यूहन्ना के अंतिम न्याय वाले दर्शन में चित्रित किया गया है। यह वही दर्शन है जिसमें दुष्टात्माओं और पुनर्जीवित नहीं हुए लोगों को आग की झील में डाल दिया जाता है। प्रकाशितवाक्य 20:12, 15 में, यूहन्ना ने यह रिपोर्ट दी:

> फिर मैं ने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गईं;
> और फिर एक और पुस्तक खोली गई, अर्थात् जीवन की पुस्तक; और जैसा उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, वैसे ही उनके कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया।
> 15और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया (प्रकाशितवाक्य 20:12, 15)।

यूहन्ना के दर्शन में, मानवता द्वारा किए गए कार्य — भले और बुरे दोनों कई पुस्तकों में थे। अफसोस की बात है कि, हर एक जन जिसका न्याय उन पुस्तकों के आधार पर किया गया वह दोषी ठहराया गया, क्योंकि कोई भी व्यक्ति इतना धर्मी नहीं है कि वह परमेश्वर की आशीषों को अर्जित कर सके। लेकिन वहाँ एक विशेष पुस्तक भी थी जिसे "जीवन की पुस्तक" कहा जाता है। उसमें सभी पुनर्जीवित हुए लोगों के नाम थे। यह पुस्तक एक कानूनी रिकॉर्ड था जिसमें कहा गया था कि यीशु ने उनके पापों के लिए दाम चुकाया था। इसलिए, जीवन की पुस्तक में सूचीबद्ध सभी लोगों ने परमेश्वर के अनुग्रहकारी वरदान जैसे क्षमा और अनंत जीवन को प्राप्त किया, और साथ में भले कामों के लिए अनंत पुरस्कार जिन्हें परमेश्वर के आत्मा ने उनके जीवनों में पैदा किया था।

अंतिम न्याय में, जिस किसी का भी न्याय पूरी तरह से उसके कामों के आधार पर होगा, उसका दण्ड आग की झील होगा। लेकिन यदि हम यीशु के सुसमाचार पर विश्वास करते हैं, और अपने पापों से पश्चाताप करते हैं, तो हमें पूरी तरह से क्षमा किया जाएगा। वास्तव में, यदि यह हमारे लिए सच है, तो हमारे नाम पहले ही से जीवन की पुस्तक में लिखे हुए हैं। कोई ऐसा कारण नहीं है कि जो हमें दोषी ठहरा सकता है — क्योंकि हम यीशु के हैं, और अपनी निज वाचा वाली विरासत के रूप में हमें खरीदने के लिए वह मरा। इसलिए, दोषी ठहराए जाने के बजाय, हम नए आकाश और नई पृथ्वी में उसकी आशीषों का आनंद हमेशा लेंगे।

अब जबकि हमने सार्वजनिक पुनरुत्थान और अंतिम न्याय पर बाइबल की शिक्षा की जाँच कर ली है, आइए अब हम अपना ध्यान अंतिम और प्रमुख विषय की ओर करते है: नया आकाश और नई पृथ्वी।

नया आकाश और नई पृथ्वी

नया आकाश और नई पृथ्वी छुटकारे वाले इतिहास का अंतिम चरण होगा — अंत-समय की परिपूर्णता की आखिरी घटना। पाप में मानवता के पतन के प्रभावों को पूरी रीति से मिटा दिया जाएगा। जैसे-जैसे परमेश्वर का स्वर्गीय राज्य पृथ्वी पर छा जाने के लिए फैलेगा सृष्टि को पूर्ण और सिद्ध किया जाएगा। और परमेश्वर के लोग उसके साथ रहेंगे और इसकी सुंदरता, शांति, स्वास्थ्य और समृद्धि में हमेशा के लिए उसमे आनंदित रहेंगे।

हम नए आकाश और नई पृथ्वी का वर्णन तीन चरणों में करेंगे, पहले उनकी शुद्धता पर, दूसरा उनके नएपन पर, और तीसरा उनके भूगोल पर ध्यान केंद्रित करेंगे। आइए उनकी शुद्धता के साथ शुरूआत करें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

शुद्धता

पहले के एक अध्याय में, हमने देखा कि परमेश्वर की योजना हमेशा से अपने स्वरूपों के साथ पृथ्वी को भरने की रही है, और उसके स्वरूपों के लिए कि वे उसकी ओर से सृष्टि के ऊपर राज करने के द्वारा उसकी सेवा और महिमा करें। हमने यह भी देखा कि हमारा शासन, कुछ हद तक, सांस्कृतिक अध्यादेश के द्वारा संचालित है, जो हमसे माँग करता है कि अदन की वाटिका के सदृश्य होने तक पूरे ग्रह को विकसित करें। हालांकि, अब तक, हमारे पाप और उसके परिणामों ने हमें उस लक्ष्य तक पहुँचने से रोक रखा है। लेकिन अंतिम न्याय के बाद, परमेश्वर सृष्टि को शुद्ध करेगा ताकि नए आकाश और नई पृथ्वी में उसकी योजना पूरी हो सके।

जैसे कि हमने देखा है, अंतिम न्याय के समय सभी दुष्टात्माओं और पुनर्जीवित नहीं हुए लोगों को आग झील में डाल दिया जाएगा। उनका दण्ड यह सुनिश्चित करेगा कि वे नए आकाश और नई पृथ्वी पर न तो निवास करें और न ही उसे भ्रष्ट करें। लेकिन यह सृष्टि को शुद्ध करने का सिर्फ पहला भाग होगा, क्योंकि आकाश और पृथ्वी को भी शुद्ध करने की आवश्यकता है। पाप के प्रभाव स्वयं सृष्टि में पैठ गए हैं, जो इसे ऐसा संसार बनने से रोकते हैं जैसा इसके होने के लिए परमेश्वर योजना बनाता है। और कारण आदम पर परमेश्वर के अभिशाप में निहित है। उत्पत्ति 3:17-19 में, परमेश्वर ने इस अभिशाप को जारी किया:

> इसलिये भूमि तेरे कारण शापित है; तू उसकी उपज जीवन भर दुःख के साथ खाया करेगा। और वह तेरे लिये काँटे और ऊँटकटारे उगाएगी ... और अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा (उत्पत्ति 3:17-19)।

इसके अलावा, परमेश्वर के अभिशाप ने कृषि को ही प्रभावित नहीं किया। निश्चित रूप से प्राकृतिक आपदाएं और जंगली जानवरों द्वारा हमले जैसी समस्याएँ इसका परिणाम हैं। लेकिन पौलुस ने सुझाव दिया कि समस्याएं इससे भी अधिक बढ़ गई हैं। दूसरे शब्दों में, सारी सृष्टि उस महिमामय अंतिम अवस्था से रहित है जिसकी योजना परमेश्वर ने इसके लिए बनाई थी — कम से कम जब तक परमेश्वर इतिहास को अंतिम परिपूर्णता तक नहीं ले जाता है। रोमियों 8:20-21 में पौलुस ने जो लिखा उसे सुनिए:

> क्योंकि सृष्टि ... अधीन करनेवाले की ओर से, व्यर्थता के अधीन इस आशा से की गई कि सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी (रोमियों 8:20-21)।

पतरस ने संसार के भविष्य में शुद्ध किए जाने की तुलना जल-प्रलय से की, जो नूह के दिनों में हुआ था। उस समय पर, परमेश्वर ने अधिकांश पापी मानवता को ग्रह से मिटा दिया था। लेकिन उसने अपने अभिशाप को पृथ्वी पर ही छोड़ दिया, और दुष्टात्माएँ अभी भी समस्या पैदा करने के लिए स्वतंत्र थे। लेकिन पतरस के अनुसार, अंतिम न्याय के बाद एक आग वाली शुद्धता पाप के सभी बचे-कुचे अधिकारों और प्रभावों को हटा देगी। जैसा कि पतरस ने 2 पतरस 3:7-12 में लिखा:

> पर वर्तमान काल के आकाश और पृथ्वी उसी वचन के द्वारा इसलिये रखे गए हैं कि जलाए जाएँ; और ये भक्तिहीन मनुष्यों के न्याय और नष्ट होने के दिन तक ऐसे ही रखे रहेंगे ... आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएँगे और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएँगे। ... उस दिन ... आकाश आग से पिघल जाएँगे, और आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएँगे

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> (2 पतरस 3:7-12)।

पतरस के विवरण के अनुसार, "तत्वों" को नाश करने के लिए परमेश्वर आग को भेजेगा। कई आधुनिक पाठक इस शब्द को संसार के भौतिक घटकों से जोड़ते हैं जैसे कि पृथ्वी, जल और वायु। लेकिन यूनानी शब्द — *स्टोइकिया* — जिसका अनुवाद "तत्वों" किया गया, वास्तव में उन मूल सिद्धांतों, या यहाँ कि दुष्टात्माओं की शक्तियों को भी संदर्भित कर सकता है जिन्हें आग की झील में हमेशा के लिए दण्डित किया जाएगा। इस तरह से इस शब्द का उपयोग नए नियम में हर स्थान पर किया जाता है, जिसमें गलातियों 4:3, 9, कुलुस्सियों 2:8, और इब्रानियों 5:12 शामिल हैं।

सार में, पतरस ने आग के द्वारा शुद्धिकरण की प्रक्रिया का वर्णन किया जो पृथ्वी को न रहने लायक, या उसके शब्दों में "जलाया जाएगा," लेकिन पापरहित बना देगी। हम यह भी कह सकते हैं कि यह बहुत कुछ वैसा ही दिखेगा जैसा कि उत्पत्ति 1 की शुरूआत में दिखता था, इससे पहले कि परमेश्वर ने सृष्टि वाले सप्ताह के दौरान ब्रह्मांड की रचना की।

> पतरस, नूह के समय आये जल-प्रलय के बारे में बात करता है। हमारे पास जो वास्तव में यहाँ पर है, वह यह है, कि जैसे नूह का संसार नष्ट हुआ था वैसे ही यह संसार नष्ट होगा। इस तरह, हमारे पास वास्तव में यहाँ पर तीन संसारों की तस्वीर है: जल प्रलय से पहले नूह का संसार, जल प्रलय के बाद वाला संसार, और वह संसार जो प्रभु के वापस लौटने के बाद रहेगा। और ये तीनों संसार दो प्रलयकारी घटनाओं से पहचाने जाते हैं: जल प्रलय और आग के द्वारा विनाश। लेकिन परमेश्वर ने अपने संसार को सिर्फ एक बार बनाया, और यह अभी भी यहाँ पर है, इस तरह नूह के समय आये जल प्रलय ने संसार को नष्ट नहीं किया, इसने इसे शुद्ध किया; इसने इसको साफ किया। और शुद्धिकरण की भाषा वास्तव में पवित्र शास्त्र में बहुत सामान्य है। यह मलाकी में है जिसने आने वाले संसार के बारे में बोला है। 1 कुरिन्थियों में इस तरह से बोलने के लिए पौलुस इसका उपयोग करता है। और मैं सोचता हूँ, कि फिर संतुलन पर, सिर्फ पाठ में ही, नूह के जल प्रलय के सादृश्य, परमेश्वर अपने इस संसार को नष्ट करने और इसे किसी अन्य संसार से बदलने नहीं जा रहा है, वह इसे साफ करने जा रहा है। अब, वह सफाई बहुत ही असाधारण होने वाली है। वह सिर्फ ऐसे ही आने और कचरा उठाने को नहीं जा रहा है लेकिन यह पूरी तरह से विनाश नहीं होगा।
>
> — डॉ. माइकेल डी. विलियम्स

अब जबकि हमने नए आकाश और नई पृथ्वी की शुद्धता का वर्णन कर लिया है, तो आइए उनके नयेपन को संबोधित करें।

नयापन

"नया आकाश और नई पृथ्वी" जैसा वाक्यांश सबसे पहले यशायाह 65:17 में प्रगट होता है। और "नया आकाश और नई पृथ्वी" वाला वाक्यांश यशायाह 66:22 में पाया जाता है। इन दोनों पदों में, "नए" के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

लिए इब्रानी शब्द है *खादाश,* जिसका अर्थ या तो "बिल्कुल नया" हो सकता है या सिर्फ "नवीनीकृत।" यशायाह में इसके संदर्भ में, इसका अर्थ है, "नवीनीकृत।" यशायाह 65:17-19 को सुनिए:

> क्योंकि देखो, मैं नया आकाश और नई पृथ्वी उत्पन्न करता हूँ। और पहली बातें स्मरण न रहेंगी और सोच विचार में भी न आएँगी ... मैं यरूशलेम को मगन और उसकी प्रजा को आनन्दित बनाऊँगा। मैं आप यरूशलेम के कारण मगन, और अपनी प्रजा के हेतु हर्षित हूँगा; उसमें फिर रोने या चिल्लाने का शब्द न सुनाई पड़ेगा (यशायाह 65:17-19)।

ध्यान दें कि नए आकाश और नई पृथ्वी में, नया-नया बनाया गया यरूशलेम शामिल होगा। लेकिन वह यरूशलेम वही वाला होगा जो पहले ही से मौजूद था, जिसमें लोग यशायाह की सेवकाई के समय रो और चिल्ला रहे थे। इसके अलावा, परमेश्वर भी अपने लोगों को आनंद मनाने के लिए रचने जा रहा था, अर्थात, वह मौलिक रूप से उनके जीवनों को बदल देगा, न कि वह बिल्कुल नए लोगों की रचना करेगा।

और जिस रीति से इब्रानी शब्द *खादाश* का अर्थ या तो "बिल्कुल नया" या "नवीनीकृत" हो सकता है, यही बात यूनानी शब्द *काएनोस* के लिए भी सच है। 2 पतरस 3:13 और प्रकाशितवाक्य 21:1 दोनों नए आकाश और नई पृथ्वी का वर्णन करते समय *काएनोस* का उपयोग करते हैं। इसके अलावा, प्रकाशितवाक्य 22 में नई सृष्टि का वर्णन भी इस तथ्य की ओर इशारा करता है कि पृथ्वी को प्रतिस्थापित करने के बजाय नवीनीकृत किया गया है। प्रकाशितवाक्य 22:3 में, यूहन्ना ने कहा,

> फिर स्राप न होगा (प्रकाशितवाक्य 22:3)।

वाक्यांश "फिर न होगा" संकेत देता है कि एक समय वहाँ स्राप था, लेकिन इसे अब हटा दिया जाएगा। दूसरे शब्दों में, हमारे शापित संसार को ठीक किया जाएगा, न कि उसे ऐसे संसार से प्रतिस्थापित किया जाएगा जिसे कभी शापित नहीं किया गया है।

नए आकाश और नई पृथ्वी के नएपन के बारे में सोचने का उपयोगी तरीका यह है कि पुनर्जीवित हुए लोगों के पुनरुत्थान से इसकी तुलना करें। हमारे नए शरीर हमारे पुराने शरीरों से गुणात्मक रूप से भिन्न होंगे। लेकिन उनके साथ उनकी निरंतरता भी बनी रहेगी। इन्हीं शरीरों को जो कब्र में पड़े हैं जिलाया जाएगा। और इसी रीति से, यही आकाश और पृथ्वी जो अभी पाप के द्वारा भ्रष्ट हैं भविष्य में फिर से बनाए जाएंगे। लेकिन वे गुणात्मक रीति से भिन्न रहेंगे। जंगली जानवर एक दूसरे के या मनुष्यों के शत्रु नहीं होंगे। बिमारी का नामो-निशान नहीं रहेगा। फिर कभी कोई प्राकृतिक आपदा नहीं होगी। और जैसा कि प्रकाशितवाक्य 21:1 संकेत देता है, नमक-जल वाले समुद्रों को भी जीवनदायक ताजे जल में बदल दिया जाएगा।

सृष्टि के लिए परमेश्वर की योजना को याद करना स्वर्ग और पृथ्वी के नयेपन के बारे में सोचने का एक और तरीका है। उत्पत्ति 1:27, 28 में, जिसे हमने पहले सांस्कृतिक अध्यादेश के रूप में पहचाना था, परमेश्वर ने मानवता को पूरी पृथ्वी को विकसित करने का कार्य दिया था। वह लक्ष्य अदन की वाटिका की सीमाओं का विस्तार करना था जब तक कि वह पूरे संसार में न फैल जाए। तब से, मानवता पूरी पृथ्वी में मानव संस्कृति को फैलाने में बहुत हद तक सफल रही है। लेकिन हमारी पापमयता के कारण, जो संस्कृति हमने बनाई है वह अदन के स्वर्ग के समान नहीं है। इसलिए, जब परमेश्वर पृथ्वी का नवीनीकरण करता है, तो सबसे पहले वह मानवता के पापपूर्ण कार्य को मिटाएगा। और इसके स्थान पर, वह संसार भर में ऐसी वाटिका की स्थापना करेगा, जिसका इरादा उसने हमेशा से रखा है।

> जब मसीही लोग सृष्टि के बारे में सोचते हैं तो अक्सर वे कुछ बहुत ही गंभीर गलतियाँ करते हैं। हम सृष्टि में, इस संसार में अपने जीवन के बारे में सोचते हैं, और हम सोचते हैं कि उद्धार वास्तव में इस संसार को छोड़ने के बारे में है। जब हम इस संसार के बारे में सोचते हैं तो हम इसकी ढेरों समस्याओं के बारे में सोचते हैं, हम सोचते हैं कि समय के अंत में परमेश्वर जो वास्तव में करेगा वह यह है कि इस सृष्टि को नष्ट कर देगा और स्वर्ग में हमें दूसरा जीवन देगा। और इस तरह, मसीही लोगों ने ऐतिहासिक रूप से अपने आप को सृष्टि से अलग कर लिया है ... हमें इसके बारे में और अधिक बाइबल के अनुसार सोचने की आवश्यकता है। परमेश्वर अपने सृष्टि से *प्रेम* करता है, वह अपनी सृष्टि के लिए समर्पित है; यह सृष्टि वह चीज़ है जिसकी कल्पना उसने समय की शुरूआत में की थी और, इसलिए, संसार में सृष्टि का पुनर्गठन करना उसकी योजना है; यह सृष्टि की पुनर्स्थापना है। इसलिए, जब समय के अंत में यह प्रतिज्ञा है कि नया आकाश और नई पृथ्वी होगी, तो यह ऐसा नहीं होगा जैसे कि इस पृथ्वी को फेंक दिया जाएगा। इस पृथ्वी का *नवीनीकरण* होगा। इसलिए, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो मसीह का अनुयायी है, मैं सृष्टि के लिए परमेश्वर के समर्पण में हिस्सा लेना चाहता हूँ, और मैं उस समय का इंतजार करना चाहता हूँ जब संसार को उस सुंदरता और महिमा और आश्चर्य से भर दिया जाएगा जिसका इरादा परमेश्वर ने समय की शुरूआत से ही इसके लिए किया था।
>
> — डॉ. गैरी एम. बुग्र

नए आकाश और नई पृथ्वी को उनकी शुद्धता और नएपन के परिप्रेक्ष्य में देख लेने के बाद, आइए इसके भूगोल का संक्षिप्त में सर्वेक्षण करें।

भूगोल

नए आकाश और नई पृथ्वी के भूगोल में कम से कम दो पहलू ध्यान देने योग्य हैं। सबसे पहले, वे एक एकीकृत राज्य होंगे।

एकीकृत राज्य

इससे पहले कि परमेश्वर ने भौतिक ब्रह्मांड की रचना की, जिसे धर्मविज्ञानी अक्सर “प्राकृतिक क्षेत्र” कहते हैं, उसने स्वर्ग के *आलौकिक* क्षेत्र की रचना की और उसके ऊपर राज किया। अलौकिक क्षेत्र स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं का आत्मिक संसार है। यह प्राकृतिक संसार के साथ-साथ मौजूद है, और जैसे परमेश्वर उन्हें अनुमति देता है जीव दोनों क्षेत्रों के बीच आ जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, जब हम मरते हैं तो हमारी आत्माएँ आलोकिक क्षेत्रों में प्रवेश करती हैं, और स्वर्गदूत एवं दुष्टात्माएँ प्राकृतिक संसार को विभिन्न तरीकों से प्रभावित करते हैं। लेकिन जैसा कि हमने इन सभी अध्यायों में उल्लेख किया है, प्राकृतिक संसार के लिए परमेश्वर का लक्ष्य हमेशा से यह रहा है कि यह उसके आलौकिक, स्वर्गीय राज्य का विस्तार बने। मत्ती 6:9-10 में प्रभु की प्रार्थना को सुनिए:

> हे हमारे पिता , तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए। तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो (मत्ती 6:9-10)।

यीशु ने अपने शिष्यों को परमेश्वर से यह प्रार्थना करना सिखाया कि वह अपने स्वर्गीय राज्य को पृथ्वी पर लाए और पृथ्वी को उसके प्रति पूरी तरह से आज्ञाकारिता बनाए जैसे कि स्वर्ग पहले ही से है। साधारण शब्दों में कहें, तो हमें परमेश्वर से यह बिनती करने को कहा गया है कि पृथ्वी के प्राकृतिक राज्य को शामिल करने के लिए वह स्वर्ग के अपने आलौकिक राज्य का विस्तार करे। अतीत में, परमेश्वर ने स्वर्ग को सिर्फ विशेष स्थानों में पृथ्वी के साथ मिलने की अनुमति दी, जैसे कि मूसा के मिलाप वाले तम्बू में सबसे पवित्र स्थान में, और बाद में मंदिर में। जैसा कि हम इब्रानियों 8:5 में पढ़ते हैं:

> [महा याजक लोग] स्वर्ग में की वस्तुओं के प्रतिरूप और प्रतिबिम्ब की सेवा करते हैं। जैसे जब मूसा तम्बू बनाने पर था, तो उसे यह चेतावनी मिली: "देख, जो नमूना तुझे पहाड़ पर दिखाया गया था, उसके अनुसार सब कुछ बनाना" (इब्रानियों 8:5)।

मिलाप वाले तम्बू और मंदिर में सबसे पवित्र स्थान परमेश्वर के स्वर्गीय सिंहासन वाले कक्ष की प्रतिकृतियाँ थी क्योंकि यह वह स्थान था जहाँ स्वर्ग और पृथ्वी मिलते थे। सबसे पवित्र स्थान स्वर्ग और पृथ्वी पर एक साथ मौजूद थे। और लैव्यवस्था 16:2 के अनुसार, उन्होंने परमेश्वर की तत्काल उपस्थिति के लिए प्रवेश द्वार पेश किया। यही कारण है कि परमेश्वर के आदेश के अनुसार ही उनमें प्रवेश करना सुरक्षित था। यह यशायाह 6:1 मे, यशायाह के दर्शन को भी समझाता है, जहाँ उसने प्रभु को उसके स्वर्गीय सिंहासन पर विराजमान देखा जबकि उसके वस्त्र का घेर पृथ्वी तक था और उससे पृथ्वी वाला मन्दिर भर गया।

लेकिन नए आकाश और नई पृथ्वी में, परमेश्वर पृथ्वी पर अपने स्वर्गीय सिंहासन को स्थापित करेगा। प्रकाशितवाक्य 21:1-5 और 22:1-3 से यह स्पष्ट है। और महत्वपूर्ण रूप से, प्रकाशितवाक्य 21:22 कहता है कि वहाँ मंदिर, या सबसे पवित्र स्थान नहीं होगा, क्योंकि परमेश्वर अपनी उपस्थिति को हर जगह अपने लोगों के साथ प्रकट करेगा। हमें ऐसे विशेष स्थान को खोजने की आवश्यकता नहीं होगी जहाँ स्वर्ग और पृथ्वी मिलते हों। और पहुँच वर्ष में सिर्फ एक बार महा-याजक तक ही सीमित नहीं होगी। इसके विपरीत, परमेश्वर के सभी लोगों के पास हर समय उसकी उपस्थिति तक पहुँच होगी।

> नए आकाश और नई पृथ्वी में परमेश्वर की तत्काल उपस्थिति में होने से हमें क्या लाभ प्राप्त होंगे? प्रकाशितवाक्य 22 में हमें बताया गया है, कि हम परमेश्वर को देखेंगे। यह एक अद्‌भुत कथन है क्योंकि हमें अन्य स्थानों पर बताया गया है — पुराने नियम में — कि कोई भी व्यक्ति परमेश्वर को कभी नहीं देखेगा। और फिर हमें बताया गया कि यीशु ने परमेश्वर को दिखाया। यूहन्ना 1, वह देहधारी परमेश्वर बना, उसने हमारे बीच में डेरा किया। परमेश्वर की उपस्थिति में होना वह बात है जिसे प्राचीन लोगों ने "सुंदर दर्शन" कहा, जिसका अर्थ है "आनंद देने वाला दृश्य।" परमेश्वर को देखने का अर्थ है आनंदित होना — ये पर्यायवाची हैं — मसीह की धार्मिकता से आच्छादित उद्धार पाए लोगों के रूप में परमेश्वर को देखना। परमेश्वर की पवित्रता से घबराहट होने के कारण, मसीह की धार्मिकता से आच्छादित न होकर परमेश्वर को देखना डरावना है। लेकिन हम उसके साथ एक ऐसा संबंध रखेंगे, अर्थात उसके साथ हमारी एकजुटता। वह अब्बा, पिता, पापा है। हम उसकी उपस्थिति में, उसका चेहरा देखने, और उसकी

> उपस्थिति का आनंद लेने में सक्षम होंगे। यह आनंद देने वाला दृश्य होगा। परमेश्वर की प्रत्यक्ष उपस्थिति में होने के कारण, जितना कि हमने कभी सपने में भी नहीं सोचा, हम पहले से कहीं अधिक आनंदित होंगे।
>
> — डॉ. रैन्डी एल्कोर्न

नए आकाश और नई पृथ्वी के भूगोल का दूसरा पहलू जिसका हम उल्लेख करेंगे, वह नया यरूशलेम है।

नया यरूशलेम

प्रकाशितवाक्य 21, 22 नए यरूशलेम का वर्णन नई सृष्टि की राजधानी और केंद्र-बिंदु के रूप में करता है। यह परमेश्वर की महिमा से चमकेगी, और हर अनमोल रत्न से सुशोभित होगी। और यह तथ्य कि यह स्वर्ग से उतरेगी, इस बात की पुष्टि करता है जो हमने एकीकृत राज्य होने के रूप में नए आकाश और नई पृथ्वी के बारे में कही है, जहाँ परमेश्वर अपने लोगों के साथ निवास करेगा।

अतीत में परमेश्वर ने ऐसा अदन की वाटिका में किया था। उसने ऐसा मूसा के दिनों में किया था जब उसने अपने लोगों का नेतृत्व निर्जन जंगल में से होकर प्रतिज्ञा किए हुए देश तक किया था। उसने ऐसा सुलैमान के दिनों में किया जब उसका मंदिर बनाया गया था। और वह हमेशा अपने पवित्र आत्मा के माध्यम से अपने वफादार लोगों में वास करता है। लेकिन नया आकाश और नई पृथ्वी इन सभी को पीछे छोड़ देंगे, क्योंकि परमेश्वर हम सभी के बीच में अपनी महिमा को प्रकट करेगा, और हम सर्वदा उसकी महिमामय उपस्थिति में रहेंगे।

दिलचस्प बात यह है कि नया यरूशलेम एक संपूर्ण घर होगा: साढ़े सात सौ कोस चौड़ा, लंबा और ऊँचा। यह लगभग 1400 मील चौड़ाई, लंबाई और ऊँचाई के बराबर है! अब, प्रकाशितवाक्य में यूहन्ना के दर्शन अत्यधिक प्रतीकात्मक हैं, इसलिए हम आश्वस्त नहीं हो सकते कि उसके विवरण सटिकता से शाब्दिक रूप में पूरे किए जाएंगे। फिर भी, ये प्रतीक संकेत देते हैं कि नया यरूशलेम अत्यधिक रूप से विशाल होगा, और उद्धार पाए पूरी मानव जाति को परमेश्वर की उपस्थिति में लाने के लिए पर्याप्त होगा।

इसके अलावा, नए यरूशलेम का घनात्मक आकार भी परमेश्वर की सवर्दा रहने वाली उपस्थिति की पुष्टि करता है। पुराने नियम में, मिलाप वाले तम्बू और मंदिर में सबसे पवित्र स्थान घन के आकार में थे। इस तरह, जैसे परमेश्वर ने सबसे पवित्र स्थानों में अपनी महिमामय उपस्थिति को प्रकट किया, वैसे ही वह अपनी महिमा को नए यरूशलेम में अपने लोगों के लिए भी प्रकट करेगा। वास्तव में, प्रकाशितवाक्य 21:23 कहता है कि परमेश्वर की महिमा इतनी उज्जवल होगी कि नए यरूशलेम को सूर्य की रोशनी की आवश्यकता भी नहीं पड़ेगी।

हमें यह भी बताना चाहिए कि नए यरूशलेम के आयाम और विवरण बार-बार संख्या बारह का उल्लेख करते हैं। पुराने नियम में, यह संख्या इस्राएल के बारह गोत्रों से जुड़ी है, जो उस युग में परमेश्वर के लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। और नए नियम में, यह संख्या बारह प्रेरितों से जुड़े हैं, जो वर्तमान युग में परमेश्वर के लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इससे पता चलता है कि नए यरूशलेम में, परमेश्वर के लोग अपनी सभी विविधताओं में, और शायद अपनी सभी विशिष्ट संस्कृतियों में भी मौजूद रहेंगे। जैसा कि हम प्रकाशितवाक्य 21:24-27 में पढ़ते हैं:

> जाति-जाति के लोग उसकी ज्योति में चले-फिरेंगे, और पृथ्वी के राजा अपने अपने तेज का सामान उसमें लाएँगे। ... लोग जाति जाति के तेज और वैभव का सामान उसमें लाएँगे। परन्तु उसमें कोई अपवित्र वस्तु, या घृणित काम करनेवाला, या झूठ का गढ़नेवाला किसी रीति से प्रवेश न करेगा, पर केवल वे लोग जिनके नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं (प्रकाशितवाक्य 21:24-27)।

नए आकाश और नई पृथ्वी में, परमेश्वर की सृष्टि को पूरी तरह से पुनर्निर्मित और नवीनीकृत किया जाएगा। वह संसार से पाप और उसके सभी प्रभावों को मिटा देगा। और वह अपने स्वर्गीय राज्य का विस्तार करेगा ताकि यह पूरे संसार को भर दे। परिणामस्वरूप, हम फिर कभी भी मृत्यु, या बीमारी, या शोक, या दुखी रहने, या रोने या दर्द के खतरे का सामना नहीं करेंगे। लेकिन नए आकाश और नई पृथ्वी की महिमा सिर्फ एक आदर्श संसार के होने में ही नहीं है। इसकी सबसे बड़ी आशीष होगी कि हम परमेश्वर की उपस्थिति में, सिद्ध शांति और संगति में सर्वदा रहेंगे।

> कभी कभी नए आकाश और नई पृथ्वी पर पवित्र शास्त्र वाली शिक्षा आज मसीही लोगों के लिए एक झटका है क्योंकि अक्सर ऐसा सोचा जाता है कि हम मरते हैं और स्वर्ग जाते हैं, तो उसे बिना शरीर वाला बादलों पर तैरता हुआ अस्तित्व माना जाता है; जबकि वास्तव में, बाइबल बहुत स्पष्ट है कि नई पृथ्वी के साथ-साथ एक नया स्वर्ग भी होगा, और हम एक नई सृष्टि में मानवीय शारीरिक अस्तित्व को जानेंगे। इस नई सृष्टि में फिर और कोई पाप नहीं होगा; फिर कोई रोना नहीं होगा; फिर कोई मृत्यु नहीं होगी। लेकिन जब यीशु ने हमें यह प्रार्थना करनी सिखाई है कि "तेरा राज्य आए ... जैसे स्वर्ग में वैसे ही पृथ्वी पर भी हो," तो यह एक उम्मीद है कि हमें नए आकाश और नई पृथ्वी की दिशा में अभी से काम करना चाहिए, लेकिन जब मसीह वापस लौटेगा, तो हमें गारंटी दी जा सकती है, कि यह काम पूरा हो जाएगा।
>
> — डॉ. सायमन वायबर्ट

उपसंहार

"युग के अंत" पर इस अध्याय में, हमने युगांत-विद्या के तीन प्रमुख विषयों की जाँच की। हमने सिद्धांत-संबंधी शुरूआती विवादों, परमेश्वर के अधिकार और सृष्टि एवं मनुष्यों पर पुनरुत्थान के प्रभाव के संबंध में मृतकों के पुनरुत्थान को देखा। हमने यीशु को न्यायाधीश के रूप में, जिन पक्षों का वह न्याय करेगा, जिन सबूतों की वह समीक्षा करेगा, और जिन निर्णयों को वह सुनाएगा, इनको देखने के द्वारा अंतिम न्याय का अध्ययन किया। और हमने उनकी शुद्धता, नएपन और भूगोल के संबंध में नए आकाश और नई पृथ्वी पर विचार किया।

इस श्रृंखला में, हमने युगांत-विद्या के सिद्धांत के कई पहलूओं की खोज की है। हमने देखा कि परमेश्वर सारी सृष्टि के ऊपर राजा और प्रभु है। हमने पुनर्जीवित हुए और पुनर्जीवित न हुए मनुष्यों के रूप में अपने जीवन के लिए इस तथ्य के निहितार्थ को देखा है। और हमने सीखा है कि वह अडिग रूप में इसके अंतिम

निर्णायक लक्ष्य की ओर इतिहास का मार्गदर्शन कर रहा है: नए आकाश और नई पृथ्वी में मसीह के मसीहा वाले राज्य की परिपूर्णता। निश्चित रूप से, हताहतों की संख्या होगी, क्योंकि अंतिम न्याय में मसीह सिद्ध न्याय को संरक्षित करेगा। लेकिन जब हम परमेश्वर की उपस्थिति में सर्वदा के लिए रहते हैं, तो परिणाम परमेश्वर के लिए महिमा, और हमारे लिए असीम आशीष लेकर आएगा।